सूफी फकीर

हज़रत रामदत्त मिश्रा 'उवैसी'

शिव शर्मा

सूफी फकीर

हज़रत रामदत्त मिश्रा 'उवैसी'

शिव शर्मा

प्रकाशक

परा वाणी, 217, प्रगति नगर, कोटड़ा। अजमेर

शीर्षक - सूफी फकीर - हज़रत रामदत्त मिश्रा 'उवैसी'

लेखक - शिव शर्मा . 217, प्रगति नगर, कोटड़ा, अजमेर।
मो. - (91) 9252270562, 9588927938
www.geetaandadhyatm.com
https://spiritualityspeaks.com

प्रथम संस्करण – 2020

प्रकाशक - परा वाणी प्रकाशन, 217, प्रगति नगर, कोटड़ा, अजमेर।

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

Book Compilation & Graphics By: -
Silver The Studio, Ajmer. Mo. (91) 9024032320

आभार!

सर्वप्रथम हज़रत रामदत्त जी के उस रूहानी वजूद को तहेदिल से सलाम जिसके करम से यह किताब लिखना सम्भव हुआ है। आपकी ही कृपा से विषय - वस्तु संकलित होती रही एवं लेखन का क्रम बना रहा।...

इस पुस्तक में विषय वस्तु की दृष्टि से सहयोगी रहे गुरु भाईयों के प्रति भी हार्दिक आभार। इन सबकी सहभागिता के बिना यह कार्य अथवा कहूं कि हज़रत के आदेश का पालन सम्भव नहीं होता। मैंने इन सब में हज़रत राम जी के प्रति आज भी जो दीवानगी देखी उस श्रद्धा भाव को सलाम। हज़रत के छोटे भाई श्री प्रभुदत्त मिश्रा के आत्मिक सहयोग से तो मेरा यह सारा प्रयास गद्‌गद् है।

श्री नंद किशोर जसनानी ने किताब का नयनाभिराम कवर डिज़ाईन किया एवं पूरी पुस्तक की सैटिंग में जो श्रम किया उसकी मैं कद्र करता हूं, कृतज्ञता व्यक्त करता हूं। पुस्तक निर्माण की प्रक्रिया में निरंतर जुड़े रहने एवं सहयोग के लिए श्री अरविन्द गर्ग, श्री पंकज जोशी, श्री प्रमोद अग्रवाल एवं श्री योगेश शर्मा का आभार।

अपने दीक्षा गुरु **हज़रत हरप्रसाद मिश्रा 'उवैसी'** को तो मेरे जन्म जन्मांतरों का प्रणाम!

शिव शर्मा

अनुक्रम

क्र.	विवरण	पृष्ठ सं.
01.	सूफी एक विचार	006
02.	सूफी नृत्य, ईश्वर से एकरूपता	012
03.	हज़रत के बाबा हुजूर	017
04.	आपके पीर हज़रत हरप्रसाद मिश्रा 'उवैसी’	022
05.	सूफी वेद जैसा एक दरवेश	026
06.	नमन	028
07.	संक्षिप्त जीवन परिचय	030
08.	हज़रत का रुहानी व्यक्तित्व	035
09.	साधकों के रुहानी अनुभव	039
10.	मेरी अनुभूतियां	048
11.	साधकों के विविध अनुभव	054
12.	हज़रत के बाद	086
13.	पुनः हज़रत रामदत्त मिश्रा ‘उवैसी’	090
14.	परिचय - श्री शिव शर्मा	093

सूफी, एक विचार!

बात आज के संदर्भ में कर रहा हूं। जो मनुष्य, भक्त (सेवा, कर्तव्य, कर्म करता है) है वह सूफी है। जिस में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य आदि गुण हैं वह सूफी है। धर्म चाहे जो हो। जाति कोई सी हो। गरीब हो या अमीर। स्त्री हो अथवा पुरुष। जो मन मस्तिष्क से साफ है वह सूफी है। उसे वैष्णव, शैव, बौद्ध, जैन, ईसाई आदि भी कहा जा सकता है; क्योंकि आधार सब का समान है।

सम्यक वाणी, दर्शन एवं सम्यक कर्म का पालन करने वाला सूफी है। ऐसा नहीं कि बाल बढ़ा लिए, किसी हुजरे में बैठ गए और सफेद वस्त्र धारण कर लिये; और हो गए सूफी। किसी के कपड़े साफ लेकिन मन में मैल तो उसे सूफी कौन कहेगा! दरगाह में बैठे हो किंतु मन में द्वेष है, अहंकार है, ईर्ष्या है; तो वह सूफी नहीं है। वह भक्त भी नहीं और साधक भी नहीं। सदियों से एक धोखा चला आ रहा है - साधु के वेश में शैतान; महात्मा के रूप में दुरात्मा; योगी के वेश में भोगी। रावण ने साधु के वेश में ही सीता का अपहरण किया था। अतः सूफी कोई वेश नहीं, आचरण है। कपड़े कोई से हों, बैठक कहीं भी हो, भाषा कोई भी हो; आचरण समान होगा, सदाचरण ही होगा। कपट नहीं, वासना नहीं, आडम्बर नहीं। कोठरी में बैठने वाला फकीर एवं सिंहासन पर विराजमान सम्राट, दोनों सूफी हो सकते हैं।

जिसका मन विभाजित है वह सूफी नहीं। जहां द्वंद्व है वहां सूफीयत कैसे? जो खुद को श्रेष्ठ साबित करता है वह सूफी नहीं। पिछले दिनों एक महिला दाता महाराज के धाम (भीलवाड़ा) गई। उसका इकलौता बेटा बहुत बीमार रहता था। किसी ने वहां जाने

की सलाह दी। उस स्थान पर एक बुजुर्ग मिले। लम्बा चौड़ा परिसर। वहां दाता (भगवान) की समाधि के अलावा और कुछ नहीं। महिला ने उन महाशय से पूछा कि वर्तमान दाता महाराज कहां मिलेंगे? वे बोले कि यहां कोई महाराज नहीं रहते हैं। मैं केवल झाड़ू बुहारा करता हूं। आप समाधि पर श्रद्धापूर्वक नारियल रख दो। बस, यहां तो ऐसा ही रिवाज है। बाद में ज्ञात हुआ कि वे झाड़ू बुहारा वाले बुजुर्ग ही वर्तमान गद्दीनशीन दाता थे। ऐसी सरलता को ही सूफीयत कहा जा सकता है।....एक नंगा फकीर था। कोई सम्राट उसके पास गया। बोला कि मैं अमुक देश का बादशाह हूं। आपकी क्या सेवा करूं? नंगा फकीर बोला कि मेरे सामने से हट जा; धूप आने दे। इतनी निस्पृह होती है साधु वृत्ति।....निजामुद्दीन औलिया के पास दिल्ली सल्तनत से प्रतिदिन प्रचुर मात्रा में अनाज व नकद राशि आती थी। शाम होने तक वे औलिया सब कुछ गरीबों को बांट देते थे। कई बार खुद के परिवार के लिए रोटी जितना आटा भी नहीं बचता था। अब कहां है ऐसा सूफी? अब तो आश्रमों में भी अमीरी आ गई है। इसके दुष्परिणाम पत्र पत्रिकाओं में छपते रहते हैं। अब तो संतों की छवियों के लिए भी सोने के सिंहासन हो गए, तस्वीरों पर सोने चांदी के फ्रेम चढ़ गए, घूमने फिरने के लिए ए.सी. गाड़ियां हो गईं और भण्डारों में स्वादिष्ट व्यंजन हो गए। पता नहीं, यह किस श्रेणी की सूफीयत है?

आप सूफी होने की बात ही छोड़ दीजिए। शैव, वैष्णव, शाक्त आदि भी मत रहिए। केवल मनुष्य बने रहने के लिए सचेत रहिए, सचेष्ट रहिए। महात्मा होने की अनिश्चित दौड़ में मत भागिये; मनुष्य बने रहिए। न साधना, न उपासना; स्वयं के कर्तव्य तक सीमित रहिए; कर्तव्य पूर्ति में चूक से बचिए। ऐसा करने वाला किसी भी सूफी से कम नहीं होगा।

क्या सूफी हुए बिना काम नहीं चलेगा, क्यों नहीं चलेगा! आप मनुष्य ही बने रहें। फिर और कुछ होने की आवश्यकता नहीं है। वे कार्य मत कीजिए जो आपको मनुष्यत्व से नीचे गिरा दें; तो इतना ही पर्याप्त है। आप गाड़ी को सड़क से नीचे नहीं उतरने देते हैं तो स्वयं की मानवीय सोच को भी 'नीचे' मत लुढ़कने दो; यह काफी है। सूफी को ऊंचे ब्राण्ड की तरह इस्तेमाल करने की तनिक भी जरूरत नहीं है। जीव की सर्वोत्तम उपाधि मनुष्य है। अब हमने इसे मनुष्य तो रहने नहीं दिया; उसे महात्मा, संत, सूफी, अवतार आदि बना दिया! उपाधियों के बोझ के नीचे मनुष्य को दबा दिया। जो मनुष्य अस्तित्व से ही 'अहं ब्रह्मास्मि' है (यह सबसे उत्तम उपाधि है) उस पर भी परमहंस, देवदूत, महाप्रभु आदि उपाधियां जड़ दीं! क्यों? मनुष्य को 'ब्रह्मास्मि' ही क्यों नहीं रहने दिया! अष्टावक्र ने राजा जनक को कहा कि तू कहीं मत जा; स्वयं के ब्रह्मरूप को जान ले। अब हुआ यह कि हमने विधि बताने वाले की ही पूजा आरम्भ कर दी; ब्रह्म को छोड़ दिया। फकीर, संत, महात्मा आदि को ब्रह्म से भी ऊपर उठा दिया। मेरे गुरु हज़रत हरप्रसाद मिश्रा 'उवैसी' ने मुझे समझाया कि दिव्य प्रकाश रूप परम सत्ता तक तुम्हें स्वयं चल कर जाना है। उन्होंने तो खुद को अपने गुरु बाबा बादाम शाह का केवल खास खादिम कहा; न औलिया, न परमहंस, न महात्मा! जबकि आप भी समर्थ थे। वस्तुतः रूहानी पुरुष कभी नहीं कहता कि उसे उपाधियों से महिमा मण्डित करो। यह सारा काम सेवादार करते हैं; किंतु उन्हें रोका जाना चाहिए। भीलवाड़ा वाले दाता महाराज ऐसे ही हैं। वे महिमा मण्डन नहीं चाहते, इसलिए यथा सम्भव जन सम्पर्क में रहते ही नहीं हैं। दाता धाम पर झाड़ू बुहारा करने वाले बुजुर्ग के रूप में ही नजर आते हैं।

वस्तुतः तो हम मनुष्य हैं। इसलिए खुद को उपाधि मत बनने दीजिए। उपाधि आपने अर्जित की है या आपको दी गई है। आपका आचरण उपाधि के माध्यम से भी मनुष्य के अनुकूल तो होना ही चाहिए। मनुष्य तो कर्म-स्वरूप है - कर्तव्य, सेवा, स्वधर्म आदि। कोई भी उपाधि यदि इस कर्मगत स्वरूप को बिगाड़ती है तो ऐसी उपाधि को छोड़ दो। जिद्दू कृष्णमूर्ति ने ऐसा ही किया था। रामकृष्ण देव किसी को आशीर्वाद नहीं देते थे; कहते थे कि यह केवल परमात्मा की क्षमता है। महर्षि रमण पहाड़ी गुफा में रहे। कश्मीर की लल्लेश्वरी जंगल में रही; उसे शिव तत्व सिद्ध था। मीरा साधु संतों के साथ यायावर रही। भूरी देवी ने सारा जीवन एक कमरे में व्यतीत कर दिया। ऐसे भी सैकड़ों उदाहरण मिल जाएंगे। उधर जैन दर्शन में देहांत से पहले सारी उपाधियां त्याग देने का शानदार विधान है।....तो मूल बात यही कि जो मनुष्य 'शिवोऽहम्', ब्रह्मास्मि, तत्वमसि' है उसे वही रहना चाहिए, उसी के लिए कर्म करने चाहिएं, उसी स्वरूप् में संकल्पित रहना चाहिए।

हज़रत के विचार !

हज़रत राम जी के विचार अलग किस्म के थे। उन्होंने एक बार कहा - सूफी वह मनुष्य है जिसका मन कलुषित नहीं हो और न ही उसमें कोई क्लेश हो। कलुषता पतन करती है एवं क्लेश हमारी शांति को बिखेर देता है। सूफी के लिए जरूरी है कि प्रतिपल अपने पीर से जुड़ा हुआ रहे - कुछ भी पहिने, कुछ भी खाए, कहीं भी (मंदिर, मस्जिद, चर्च आदि) आए जाए, कोई फर्क नहीं पड़ता है; बस, अपने गुरु के ध्यान में ही रहे। वे कहते थे - सांस में गुरु, प्यास में गुरु, स्वाद में गुरु, वजूद में गुरु। सूफी भक्त ऐसा होता है।

आपका कथन है - फूल, माला, प्रसाद आदि पेश करने से आंतरिक विकास नहीं होता है। ऐसे ही गुरु के पांव दबाने से रूहानियत नहीं मिलती है। तुम केवल अपने मुर्शिद के ख्याल में फना रहो, चुप रहो। अपनी शख्सियत को उजागर मत करो। सामाजिक रिश्तों से मत बंधो। यदि तुम ऐसा अभ्यास करते हो तो तुम जरूर सूफी हो। हमने उनका ऐसा ही रूप देखा था। वे साधकों के साथ होली खेलते, दीवाली मनाते, मुरीदों को पिकनिक पर ले जाते, कैरम खेलते, अंताक्षरी में सहभागी होते किंतु खुद के रूहानी व्यक्तित्व को छिपाए रहते थे। अपने आध्यात्मिक मर्तबे की हवा तक नहीं लगने देते थे। जब किसी का कठिन काम कर देते तो आभास होता था कि वे कितने सक्षम थे। सबको मौज मस्ती कराते रहे लेकिन रूहानियत मात्र कुछ साधकों को ही दी। उन्होंने रुपये, पैसे, जमीन, जायदाद तो लुटाई लेकिन नाम की अनंत गहराई और असीम आकाश में जिसे झांकने दिया वह अवश्य ही नसीब वाला होगा। सूफी ऐसा ही होता है।

आपके कुछ कथन

(1). संचय मत करो, सब कुछ दे दो।
(2). जो कोई मांगने ही आ गया, उसे खाली हाथ मत लौटाओ।
(3). सूफी निर्लिप्त रहता है। वह खुद से भी अलिप्त ही होता है।
(4). सूफी का 'मैं' मिट जाता है। वह अपने 'गुरु के भरोसे' काम करता है।
(5). गालियां सुनते हुए भी अपना कर्तव्य पूरा करते रहो।
(6). सब कुछ जानते हुए भी चुप रहो; जताओ मत कि तुम्हें ज्ञात है।

(7). इस राह में पग-पग पर दुश्मनी का सामना करना पड़ता है। इसलिए अपने पीर में फना रहो। तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा।

ये सारी बातें उन में साकार थीं।

2. सूफी नृत्य और ईश्वर से एकरूपता

बात तेरहवीं सदी की है; मौलाना जलालुद्दीन रूमी। कीनिया या तुर्की का निवासी था। कवि था। तबीयत से सूफी था।

एक दिन बाजार में घूम रहा था। किसी सुनार की दुकान के पास पहुंचा तो उसे हथौड़ा चलने की आवाज सुनाई दी। सुनार हथौड़ी से धीरे-धीरे सोने की डली को कूट रहा था। उस आवाज में एक लय थी। एक धुन थी। रूमी वहीं ठहर गया। उस धुन में उसने 'ला इलाहा इल्लल्लाह' (ईश्वर के अलावा अन्य कोई पूजनीय नहीं है) सुना। रूमी वज्द के हाल में पहुंच गए। रक्स हुआ। नाचने लगे। गति तेज हुई। अब रूमी बेखुदी की अवस्था में चले गये। शरीर की सुध नहीं रही। केवल ऊर्जा का घेरा रह गया।

उन्हें पहले तो लगा कि सब तरफ रूमी ही रूमी है (सर्वात्मवाद)। फिर दिखा कि चारों तरफ खुदा ही खुदा है (सर्व खल्विदं ब्रह्म); प्रकाश ही प्रकाश। तब न समा था; न जिक्र। बस, एकरूपता थी। थोड़ी देर बाद रूमी सामान्य हुए। अब पहले वाला जलालुद्दीन रूमी तिरोहित हो गया। जो रह गया वह सूफी दरवेश रूमी था। तभी से सूफी नृत्य, हाल, समा का आरम्भ हुआ।

सूफी नृत्य एक आध्यात्मिक विधि है। इसके द्वारा ईश्वर से एकाकार को सम्भव बताया जाता है। यह नृत्य बांए से दांए होता है। इसमें ग्रह तारों के घूर्णन का अनुकरण है। ब्रह्माण्ड में स्थिर कुछ नहीं है - तारे, ग्रह, कण, विद्युत चुम्बकीय तरंगें आदि सब के

सब घूम रहे हैं। एक निश्चित लय में गति कर रहे हैं। ऐसी ही लयात्मक गति को ही नृत्य कहते हैं। उधर हमारे शरीर में भी अरबों खरबों कोशिकाएं, न्यूरांस आदि एक लय से गति कर रहे हैं। वहां भी विविध अंगों के संकुचन, विकुंचन का नाद गूंज रहा है। इसीलिए मनुष्य समाज में नृत्य कला का विकास हुआ। नृत्य हमें स्वयं के मूल से जोड़ता है।

अब देखें कि गति क्या करती है। पृथ्वी की तेज गति के कारण वह स्थिर लगती है। यह 400 मीटर प्रति सेकण्ड की गति से घूमती है। उस पर हम सब टिके हुए हैं। कुछ भी डावांडोल नहीं है। यह तेज गति का कमाल है। ऐसे ही सूफीयाना नृत्य में क्रमशः गति बढ़ती है। चरम बिंदु पर नर्तक स्वयं को भूल जाता है। मन स्थिर हो जाता है। शरीर एवं लम्बे चोगे का इस गति के कारण एक घेरा बन जाता है; वह वैसा ही दिखता है जैसा तेज गति से घूमता हुआ पंखा नजर आता है। शुरु में नृत्य के साथ-साथ लयबद्ध ढंग से साधक अल्लाह अल्लाह बोलता है। अंत में उसका बोलना थम जाता है किंतु अलौकिक नाद में उक्त शब्द सुनाई देता रहता है। यही समा है; सुनना, दिव्य शब्द सुनना।

इसके साथ जो संगीत होता है उसमें कौल और जिक्र की धुनात्मक पुनरावृत्ति ही रहती है। संगीत भी आंतरिक एकरूपता वाली कशिश को उद्दीप्त ही करता है। इस तरह सूफी महफिल का समा नृत्य से परम में निरत होने का माध्यम बन जाता है।

अब भक्ति में नृत्य के आरम्भ की बात करें। अध्यात्म में नृत्य का आरम्भ भी भारत की देन है। देव ऋषि नारद ने भक्ति में संगीत एवं नृत्य को जोड़ा। नारद भक्ति सूत्र में

ऐसे संकेत मिलते हैं। हमारी देव संस्कृति में भक्ति, नृत्य, संगीत का समन्वय था। फिर श्रीकृष्ण ने रास के रूप में आध्यात्मिक नृत्य को चरम सीमा पर पहुंचा दिया - गोपियां जीवात्मा, श्रीकृष्ण परमात्मा; रास के सात घेरे यानी मनुष्य के सात शरीर; स्थूल, प्राण देह, मनः शरीर, मनस शरीर, आत्म देह, कॉस्मिक शरीर एवं अशरीर। रास में गति, धुन एवं कृष्ण के शक्तिपात के समन्वित प्रभाव से जीवात्मा शरीर के सातों घेरे पार करते हुए स्वयं के ब्रह्म रूप (श्रीकृष्ण) के साथ एकरूपता की अनुभूति करती थी। बाद में उसी आनंद की स्मृति में गोपियां बिलखती थीं। उधर 7-8 वीं सदी से मध्यकालीन भक्ति आंदोलन तक दक्षिण व उत्तर भारत के कृष्ण भक्तों ने भक्ति में नृत्य संगीत का निरंतर पोषण किया। सोलहवीं सदी में चैतन्य महाप्रभु ने तो कृष्ण भक्ति के कीर्तन में नृत्य को जैसे साकार कर दिया। अतः प्रमाणित है कि भक्ति में नृत्य भारत के वैष्णव भक्तों की देन है।

इस सूफी नृत्य का अभ्यास करना पड़ता है। इसे सचेत ध्यान योग (कांश्यस मेडिटेशन) कहते हैं। आप को चक्कर खा कर गिरना नहीं है। बेखुदी में भी होश कायम रखना है। इसलिये गति एवं मुद्रा (दाहिना हाथ ऊपर आकाश की तरफ और बायां हाथ धरती की तरफ) का गहरा अभ्यास करना होता है। आप को नृत्य के द्वारा रूहानी एकाग्रता की अवस्था में पहुंचना है।....यों नाच लेना सरल काम है लेकिन आध्यात्मिक उपलब्धि के लिये नाचना एकदम अलग बात है। भारतीय क्लासिकल नृत्य में भी परम भाव ही है। अंग संचालन, गति, मुख मुद्रा, नेत्र भंगिमा और वाद्य के साथ तालमेल - इन सबकी एक रूहानी लय बनती है। ताल बिगड़ते ही नर्तक बेताला हो जाता है; नृत्य के जरिये साधना भंग हो जाती है।

हमारे देश में भगवान शिव का ताण्डव नृत्य एवं देवी पार्वती का लास्य नृत्य सृष्टि रचना से जुड़े हुए हैं। ऐसा भी कहा जाता है कि ब्रह्माण्ड में अणु परमाणु सतत् घूर्णन करते रहते हैं। उनसे जो आकृति बनती है उसी का प्रतिरूप है शिव की 'नटराज' मुद्रा.....तो सूफीयाना साधना पद्धति में समा या हाल एक रूहानी वास्तविकता है। इस प्रसंग में एक और बात उल्लेखनीय है। सूफियों की महफिल में जब कलाम पेश किये जाते हैं तब कभी कभी रूहानी वातावरण बन जाता है। कव्वाली के बोल, कव्वाल की गायकी का अंदाज, वाद्य संगीत और महफिल की सदारत करने वाले फकीर की नज़र; इन सबके समन्वित प्रभाव से वहां उपस्थित कुछ मुरीद झूमने लगते हैं। उनमें से किसी में वज्द या रूहानी नशा बढ़ जाता है। वह उठ कर हाल की दशा में नाचने लगता है और फिर बेखुदी की अवस्था में पहुंच जाता है। यह सब अनायास होता है। इसके लिए अभ्यास नहीं करना होता है।

इस तरह नृत्य से रूहानियत और रूहानियत में नृत्य; ये दो पृथक स्थितियां हो गईं। भक्त भगवान के लिये गाते हैं (स्वामी हरिदास)। ऐसे ही हमारे कुछ प्रसिद्ध मंदिरों में देव निर्माल्य (प्रभु को भेंट कर दी गई कुमारी) भगवान के लिए ही नृत्य करती थीं। इसी तरह सूफी भी ईश्वर के लिए नाचता है एवं उसी में उसे रूहानी अनुभूति हो जाती है।

भक्ति का बहुत विस्तार है। गायन में भक्ति। नृत्य में स्तुति। शिल्प में इबादत। चित्रकला में वंदना। लेखन में शब्द ब्रह्म की उपासना। कथा और प्रवचन में भी भक्ति। मनुष्य के संस्कार, परिवेश, आस्था आदि के प्रभाव स्वरूप किसी भी कला के माध्यम से रूहानियत साकार हो सकती है।

भक्ति के दौरान भक्त में एक तरह का नशा चढ़ता है। इसे वैष्णव भक्त 'भावावेश' कहते हैं और सूफी मत में यह दशा 'वज्द' कही जाती है। इसके पांच माध्यम हैं - पहला, सीधे परम शक्ति द्वारा शक्तिपात या कॉस्मिक एनर्जी का साधक में सीधा प्रवेश। दूसरा, गुरु द्वारा शक्तिपात। तीसरा, ध्यान योग। चौथा, मंत्र का जाप; और अंतिम, नृत्य, भक्ति नृत्य, सूफी नृत्य। इस अवस्था में सचेत बेखुदी जैसी दशा रहती है यानी बेहोशी में होश। गला रुद्ध हो जाता है; कुछ भी नहीं बोला जाता है। भूख प्यास नहीं लगती है। नेत्र निमीलित रहते हैं। भक्त एक तरह की अनिर्वचनीय मस्ती में मग्न रहता है। यह दशा जब स्थाई हो जाती है तब इसकी परिणीति एकरूपता में होती है। गुरु से एकरूपता है तो गुरु आपका 'सारथी' बन जाता है। यदि ईश्वर के साथ तादात्म्य हो गया तो वह परा शक्ति 'सारथी' हो जाती है। गीता में श्रीकृष्ण ने कहा भी है कि जो मेरी शरण में रहता है, मैं उसका सारथी बन जाता हूं। इस तरह उपर्युक्त पांचों स्थितियां परम से एकरूपता के माध्यम हैं। ऐसे आनंद में एक दो डुबकी लगाने के लिए कीर्तन या कव्वाली सबसे सरल माध्यम हैं।

3. हज़रत के बाबा हुजूर साहब!

प्राचीन काल से तपोभूमि के रूप में विख्यात रहे अजमेर शहर को आधुनिक युग में भी कुदरत ने एक कलंदर की सौगात दी है। बाबा बादामशाह उवैसी। उवैसिया फकीर कलंदर होते हैं। पीर परस्ती ही उनकी खुदा की बंदगी है। लगभग 1921 से 1965 तक यहां पर हजारों लोगों पर ऐसा करम हुआ कि वे जन-जन के बाबा हुजूर हो गए। मैनपुरी, उत्तर प्रदेश के गालव गांव से चलकर वे अजमेर आए। उन्हें यह प्रेरणा महात्मा प्रेमदास से मिली थी। दरगाह क्षेत्र में हकीम जहूर अहमद की हवेली में वे पहली बार सूफी संत हजरत निजामुल हक कलंदर से मिले और दीक्षा ली। पुष्कर के नाग पहाड़ में एक छोटी से गुफा में नौ साल तक कठोर तपस्या की। इस दौरान भारी वर्षा, कड़कड़ाती ठंड और जला देने वाली गर्मी को उन्होंने सहन किया। तपस्या पूरी करने के बाद पहाड़ से नीचे उतरे तो खुश होकर पीर ने गले लगाते हुए कहा.....'मेरा बादाम, मेरा शेर'। इस तरह अजमेर को एक ऐसा महात्मा मिल गया। सोमलपुर के निकट सुरम्य पहाड़ियों की तलहटी में बाबा के रुहानी ठिकाने ने संगमरमरी दरगाह का रूप लिया। इसको साकार करने में उनके मुरीद हरप्रसाद मिश्रा ने भूमिका निभाई। बाबा साहब दीन-दुनिया के लिए दुआ करते थे। उनकी खास बात यह थी कि खुद से असंग लेकिन दीन-दुनिया के संग थे। कायनात के लिए भजन करते थे।

ऐसे थे बाबा साहब के पीर

उनके गुरु निजामुल हक साधना काल में बीस वर्ष तक ज़मीन पर नहीं लेटे। नींद ज़्यादा सताती थी तो बैठे-बैठे ही झपकी लेते थे। खुदा के कामिल बंदे

थे.....आजीवन रूहानियत का नूर बरसाते रहे। उनकी रुहानी बुलंदी का एक उदाहरण देखिए - अजमेर के निकट जिलावड़ा गांव है। इस पूरे गांव को एक ही नाम बख्श दिया और कहा कि पीढ़ी दर पीढ़ी यही नाम तुम सब पर करम करता रहेगा। आज 75 साल से ज़्यादा हो गए.....यहां उक्त कथन चरितार्थ हो रहा है।

श्रीकृष्ण जैसा कोई नहीं

सूफी फकीर होते हुए भी भगवान श्रीकृष्ण के प्रति हुजूर में परम भाव था। वे फरमाते थे कि प्रेम व कर्म रीति कृष्ण से सीखो। स्थान पर साधकगण जन्माष्टमी मनाते थे, खीर का भोग लगाते थे। गुरुदेव हज़रत हरप्रसाद मिश्राजी बताते थे कि कृष्ण चेतना सचमुच भोग ग्रहण करती थी। उनके लाडले शिष्य मिश्राजी ने श्रीकृष्ण के दर्शन किए थे। गुरुदेव के पास दिल्ली से संत महेंद्र मिश्रा आते थे.....उनको भी ऐसे दर्शन हुए और उन्होंने तो मालिक की कृपा से महाभारत का युद्ध भी चिदाकाश में देखा - अंतःकरण में जो चित्त होता है, वही साधना के प्रभाव से फैल कर चिदाकाश हो जाता है। यहां साधकों को बांसुरी की मीठी धुन सुनाई देना बाबा का करम ही है।

मेरे दर से फरियादी खाली नहीं लौटेगा

कुछ मुरीदों ने एक बार बाबा से सवाल किया कि 'आपके पर्दा कर लेने के बाद लोगों का क्या होगा? मुस्कराते हुए वे बोले - अरे, होगा क्या जो यहां की चौखट चूम लेगा वह खाली हाथ नहीं लौटेगा'। जब आप शरीर में थे तो आने वालों को आश्वासन देते थे कि - तुमने हमें देख लिया.....बस, अब जाओ.....मालिक करम करेगा। आप

अपने पीर के भरोसे ऐसी बात कहते थे। ऐसा कथन आज सच साबित हो रहा है - जयपुर से एक न्यायिक अधिकारी दो माह पहले यहां आए फिर दो दिन बाद ही वापस आए। उस वक्त दरगाह में कोई पत्रकार उन्हें मिल गया। बातचीत हुई, जज साहब ने कहा कि एक बार आने से ही उनके सारे काम हो गए.....यह बहुत चमत्कारी जगह है। बाद में वे मुझसे भी मिले थे। मुंबई से कोई रोगी आया। उसे ऐसी बीमारी थी कि हर संभव इलाज करा लेने से भी ठीक नहीं हुई। वह यहां आया। एक माह तक 3-4 घंटे आस्ताने में बैठता था। वह बिल्कुल चंगा हो गया। यहां नियमित आने-जाने वाले सारे लोग इस सच्चाई को जानते हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हैं। समय, संयोग और कृपा के समन्वय से ऐसा प्रत्येक धाम पर होता है।

जड़ी बूटियां बोलती हैं

गुरुदेव ने बताया कि हुजूर को सैकड़ों जड़ी बूटियों का ज्ञान था। बाबा उनसे कहते थे कि बेटा ये वनस्पतियां भी बोलती हैं। एक निश्चित समय और तय मंत्र इनके पास जा कर बोलो तो ये अपना औषधीय उपयोग स्वयं बताती हैं। वे बताते थे नाग पहाड़ में ऐसा पौधा उगता था जिसकी दो पत्तियां खा लेने से एक सप्ताह भूख नहीं लगती थी। इसी तरह एक अन्य पौधे की पत्तियों से सोना बनाया जा सकता था। आपको ऐसी तेरह सौ औषधीय वनस्पतियों की जानकारी थी। यही कारण है कि आप दुःसाध्य रोगों का भी इलाज कर देते थे।

समाधि बोलती है

आज देही तौर पर वे नहीं हैं किंतु आपकी समाधि बोलती है.....दुखियारों के काम करती है। कोई आदमी उच्च न्यायालय में केस जीत गया। सरकार अपील में जा रही थी वह आस्ताने में बैठा था। आवाज आई - बधाई, अपील नहीं होगी - ऐसा ही हुआ। एक का बच्चा विदेश में बीमार पड़ गया, लाख कोशिश करने पर भी डॉक्टर उसे दवा नहीं दे पा रहे थे। आस्ताने में प्रार्थना की.....बाबा बोले - उठो! उसने दवा पी ली है। बाहर आकर फोन किया तो ऐसी ही खबर मिली। एक मुरीद को आस्ताने में कोई मंत्र सुनाई दिया। दो माह बाद तत्कालीन महाराज रामदत्त जी ने उसे वही मंत्र देते हुए कहा कि आगे इसका जाप करो। कोई दादाजी समाधि कक्ष में बैठे थे। आवाज आई - तुम्हें पोता दे रहा हूं। कुछ माह बाद ही उन्हें पोता प्राप्त हुआ। ऐसे तो अनगिनत दृष्टांत हैं। इन सबसे बढ़कर यह सच्चाई है कि वहां इस्मे आजम गूंजता है तथा दिखता भी है। बाबा साहब ने अपने मुरीद हज़रत हरप्रसाद मिश्रा को अपनी रूहानियत से सराबोर कर दिया था। इतने महान थे बाबा बादाम शाह! आप अपने मुरीद के साथ अद्वैत हो गए थे। नज़र वालों को आज भी अद्वैत रूहानियत एक दूसरे की समाधि पर प्रत्यक्ष दिखती है। यही अद्वैत चेतना इस सिलसिले के साधकों पर करम फरमाती है।

नजर से देखा, बला हट गई

प्रेत बाधा कैसी भी हो, वे केवल दृष्टि पालन से दूर कर देते थे। प्रत्यक्षतः कुछ नहीं करते। पीड़ित मनुष्य आता, पास बैठता, एक-दो औपचारिक बात करते और फिर कह देते कि अच्छा जाओ। पास बैठे लोग असमंजस में पड़ जाते कि बाबा ने किया तो कुछ भी नहीं और कह दिया कि जाओ। आपकी तंत्र शक्ति इतनी उच्च कोटि की

थी।.....मौज में होते तो हथेली पर फूंक मारते तथा कह देते कि चलो, हो गया इलाज। कई लोग अभी भी इन बातों के साक्षी है।

भीतर ब्रह्म विद्या, लेकिन बाहर कोरे कागज जैसी सादगी

अध्यात्म जगत में वक्त के बादशाह थे। दूसरों का मुकद्दर बदल देने की कुव्वत रखते हुए भी कभी रुतबा नहीं जमाया। पैरों के नीचे दौलत का पहाड़, लेकिन सदैव सादा जीवन गुज़ारा। अजमेर में आपने उवैसिया मुरीदों को निहाल किया और आज भी कर रहे हैं। आपको शत-शत प्रणाम।

4 .आपके पीर साहब हज़रत हरप्रसाद मिश्रा 'उवैसी'

श्री रामदत्त मिश्रा उवैसी के पीर सूफी संत हज़रत हरप्रसाद मिश्रा उवैसी बाबा बादामशाह के मुरीद रहे हैं। आश्रम के सभी साधक व अन्य आगंतुक आपको पिताजी कहते हैं। आप रूहानियत की बुलंदी पर थे।

आप कहते थे कि मनुष्य के व्यक्तिगत ‘‘मैं’’ का ब्रह्मांडीय हो जाना ही खुद ब्रह्म हो जाना है और अपने वजूद का वैश्वीकरण कर देना ही फकीरी है। आपने इसे सिद्ध भी किया। साथ ही गुरु सेवा की मिसाल प्रस्तुत की - उनके प्रति शुक्राना के रूप में सोमलपुर वाली दरगाह बनवा दी जो पूरे देश में मिनी ताजमहल की तरह विख्यात है।

रामगंज से गुरु लोक तक

आपका जन्म रामगंज में सन 1925 में हुआ था। पढ़ाई डीएवी स्कूल और गवर्नमेंट कॉलेज में पूरी हुई। नौकरी रेलवे वर्कशॉप में क्लर्क से कार्यालय अधीक्षक के पद तक सम्पन्न हुई। सुशीला देवी जी से विवाह किया। गृहस्थी में चार पुत्रियां और तीन पुत्र। पहलवानी में उस्ताद। क्लासिकल संगीत में मास्टर। रेलवे यूनियन के तेज-तर्रार नेता। बस ऐसा था उनका जीवन रामगंज में। फिर 1952 के आसपास बाबा हुजूर बाबा बादामशाह से मुलाकात हुई। फकीर की आंखों ने आपको देखा, परखा और अपना लिया। गृहस्थी और राजकीय सेवा के मध्य से साधना की राह निकली, जो आध्यात्मिक राजमार्ग से जुड़ कर आपको सर्वोच्च सूक्ष्म जगत 'गुरु लोक' तक ले गई।

इसके प्रभाव से चिदाकाश में पूरा 'स्प्रिचुअल इंटरनेट' प्रत्यक्ष हो गया। आप सर्व समर्थ संत हो गए।

रसोईघर में नवधा भक्ति

भक्ति के नौ प्रकार माने गए हैं। आप कहते थे कि स्त्री अपने रसोईघर में ही भक्ति की पूर्णता प्राप्त कर सकती है। रसोई में जो कुछ बनता है, वह अपने इष्ट या गुरु के ध्यान में रहते हुए बनाए। फिर उसका भोग लगाए। बस, हो गई भक्ति। उनके ध्यान में चौका धोया तो प्रतिमा प्रक्षालन हो गया.....ध्यान में याद आती रही तो नाम सुमिरन हो गया.....भोग लगाने में पूजा-अर्चन-वंदन व स्वामी-सेवक भाव की भक्ति सम्पन्न हो गई। इस तरह प्रतिदिन दो घंटे की यह "सर्वश्रेष्ठ मानस भक्ति" होती रहती है।

फकीर लेता नहीं देता है

आप फरमाते थे कि फकीर किसी से कुछ नहीं लेता है। खिदमत के बदले धाप कर देता है। आपने दौलत और रूहानियत, दोनों धाप कर दी। रोगियों को मौत के मुंह से खींचकर जिंदगी दी। मरणांतक दुर्घटना में सूक्ष्म रूप से पहुंचकर मुरीदों को प्राण दान दिया। यह सब करके भी बोलते कुछ नहीं, मुस्कराते रहते थे। देने का यह क्रम आज भी जारी है।

इतना चैतन्य है आस्ताना

गुरुदेव का आस्ताना रूहानियत का साकार स्वरूप है। किसी को ब्रह्म कमल दिखता है, तो अन्य को कैलाश मानसरोवर के दिव्य दर्शन होते हैं। यहां सूफी और वैष्णव मंत्रों की अनुगूंज है। उर्स के दौरान इसी आस्ताने में रुहानी उर्स महोत्सव के दर्शन होते हैं। गुरुदेव कभी समाधि पर व कभी सामने रखे हुए पलंगनुमा आसन पर बैठे हुए दिख जाते हैं। यहां आदेश मिलते हैं, निर्देश होते हैं, सलाह मिलती है, फटकार सुनाई देती है एवं दुलार वाली थपकी का अहसास भी होता है। आप में आस्था है तो यहां सब कुछ वास्तव है।

गुरुदेव का त्रिआयामी मिशन

व्यस्ततम जीवन में आप तीन मिशन लेकर चले थे। पहला - अपने पीर बाबा हुजूर की दरगाह का निर्माण कराया। उवैसिया सत्संग आश्रम की स्थापना की और वहां भी रूहानियत को संगमरमर में स्पंदित किया। झांसी में अपने दादा पीर की दरगाह में मरम्मत एवं विस्तारीकरण कराया। दूसरा - आश्रम के पास दादा हुजूर की याद में चेरिटेबल अस्पताल शुरू किया। वहां निशुल्क चिकित्सकीय परामर्श एवं लागत मूल्य पर दवा उपलब्ध कराई जाती है। आश्रम में ही पुस्तकालय एवं बाबा बादामशाह शोध संस्थान की स्थापना की। तीसरा मिशन था प्रबुद्ध एवं जिज्ञासु मनष्यों को नाम दीक्षा देकर अध्यात्म की राह पर आगे बढ़ाना। इनमें से कुछ साधकों को आपने ऊपर भी उठाया कि चिदाकाश में ब्रह्मांड का ओर-छोर तक दिखा दिया। ये तीन कार्य आज भी स्पष्ट नजर आते हैं।

रुहानियत की खुशबू आज भी

आपने 22 नवंबर 2008 में परदा कर लिया था, किन्तु उनकी दरगाह में रुहानी उपस्थिति का एहसास आज भी है - खुशबू से, हवा में गुनगुनाहट से, झुलसा देने वाली धूप में ठंडे झोंके से, रोशनी में अनूठी दमक से, तथा अचानक ही आपके सामने आ जाने से। ऐसा मुरीदों को उनके घर पर भी अनुभूत होता है। सोफे पर, टीवी के पर्दे पर, कमरे में चलते हुए और थाली में रोटी खाते हुए भी। आप उर्स के दौरान आएंगे तो देखेंगे कि ऐसे महात्मा के आश्रम में खुदाई नूर किस तरह दमकता है।

5 .सूफी वेद जैसा एक दरवेश

हज़रत रामदत्त जी साकार सूफी वेद जैसे रहे हैं। जो सूफीयत का ज्ञान करा दे वह सूफीवेद। जो सूफी फकीरी का बोध करा दे वह सूफी वेद। जो सूफी साधना की बुलंदी तक पहुंचा दे वह सूफी वेद।। रामदत्त जी ऐसे ही थे। उनमें सूफीयत साकार थी। उनमें गुरु भक्ति, प्रेम और सेवा भाव लबालब भरा हुआ था - जैसे एक ही बदली में पूरा सावन रिमझिम करता रहे। हमने इसीलिए उन्हें सूफी वेद जैसा फकीर कहा है।

वेद के चार भाग हैं- संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद। उपनिषद 108 हैं। उनमें सबसे छोटा माण्डूक्य उपनिषद मात्र बारह श्लोक का है। इसमें ओम का विवेचन किया गया है। इसी तरह हज़रत रामदत्त जी भी केवल पांच साल गद्दीनशीन रहे थे। उक्त अल्पावधि में ही वे सूफीयत को साकार कर गए। इस कारण वे आज भी अपने मुरीदों व अन्य साधकों के दिल में धड़कते हैं।

वे दरवेश थे। दरवेश का मतलब है त्याग करने वाला फकीर। उन्होंने त्याग ही त्याग किया था - तन, मन, धन से दूसरों के कार्य किए। जिसने जो मांगा उसे वह दे दिया परिणाम भले ही खुद ने भुगते। बाहर जो दिया वह तो सबको दिख गया, किन्तु जिसे अंदर ही अंदर (रूहानियत) दिया वह किसी को नहीं दिखा।

मेरी नज़र में वे वैष्णव सूफी थे। देखिए एक तो मुस्लिम सूफी। दूसरा हिंदू या अन्य सूफी। तीसरा वैष्णव सूफी। वैष्णव कौन? जो सबको प्रेम करे वह वैष्णव - वैष्णव

जन तो ते ने कहिये जो पीर परायी जाने रे। तो राम जी दूसरों की पीर दूर करते थे। वे सब से प्रेम करते थे। सबके साथ त्योहार मनाते थे, पिकनिक पर जाते थे, होली खेलते थे दीवाली पर पटाखे छोड़ते थे। भजन गाते थे। शिवरात्रि मनाते थे। उन्होंने फकीरी को हमारी वैष्णव संस्कृति से जोड़ दिया था। ऐसे संत को हमारा सलाम!

6. नमन

डॉ. शकुन्तला 'किरण'

अक्टूबर पच्चीस जन्मदिन, भावनाओं का नमन!
श्रद्धा पूरित चाह की, नव कल्पनाओं का नमन!!
भोर ने चित्रित किया जो, इन्द्रधनुषी स्वप्न से,
नयन-आंगन में सजी, उन अल्पनाओं का नमन!!
विश्वास की मधु चाँदनी में, अश्रु से भीगी हुयी,
नेह का आँचल पसारे, याचनाओं का नमन!!
पंखुरी पर प्रीत के जो गीत शबनम ने लिखे-
आपके चरणों में उन महकी ऋचाओं का नमन!!
आपकी पद रज से इस आंगन में उपजे गर्व को,
पूर्व जन्मों के सुफल की, साधनाओं का नमन!!
''हर'' स्वयं सन्मुख हमारे, ''राम'' के ही रूप में,
जो न वर्णित हो सके, उन आस्थाओं का नमन!!
उस उवैसी सूर्य की ज्योति मिले सब को सदा,
ये कृपा बढ़ती रहे, इन कामनाओं का नमन!!

भावांजलि

पच्चीस अक्टूबर को हुआ, रोशन चिराग जिसको-
नूरे उवैसी ‘‘हर’’ ने बड़े नाज से था पाला!
बाबा बादाम शाह के, अति लाडले - दुलारे,
देवी सुशीला माँ के बने गर्व तुम निराला!
कितना हसीन दिन है, जिसका न कोई सानी,
शहंशाहे आलम, फैला दिया उजाला!

दुखिया जो पास आये, दुख उसका दूर करते,
इच्छित मुरादें सब की, करते हो पूरी दाता!
तुम हो कृपा के बादल, बरसाते सुख का अमृत,
बनते सहारे सब के, असहाय जो भी आता!
कितना हसीन दिन ये, गर्वित उवैसी कुल सब,
आफताबे आलम, जग है बधाई गाता!

7. संक्षिप्त जीवन परिचय

श्री रामदत्त मिश्रा से हज़रत रामदत्त मिश्रा 'उवैसी' तक पहुंचने की अवधि ही उनका संक्षिप्त जीवन है। आप उवैसिया सिलसिले के फकीर हैं इसलिए आपके नाम के साथ उवैसी लगाया जाता है। यह उवैसिया, सूफी साधना का एक प्रमुख सिलसिला है। उवैस करनी साहब से यह आरम्भ हुआ था। इसे भारत लाने का श्रेय हज़रत सुहाब खाँ साहब को है। आपकी व अन्य चार उवैसी बुजुर्गों (अल्लानूर खां साहब, सुभानशाह साहब, बाबा लक्ष्मणदास साहब एवं मौलाना गुल मोहम्मद साहब) की दरगाह रामपुर में है। दो दरगाह झांसी में हैं (हज़रत निजामुल हक साहब और हाफिज मोहम्मद इब्राहीम साहब)। हज़रत निजामुल हक साहब के आदेशानुसार उनके मुरीद बाबा बादाम शाह साहब इस उवैसी सिलसिले को अजमेर लाये। आपकी दरगाह सोमलपुर में है। आपने अपना आध्यात्मिक उत्तराधिकारी श्री हरप्रसाद मिश्रा जी को बनाया। गद्दी पर बैठने से आप हज़रत हरप्रसाद मिश्रा 'उवैसी' कहलाये। तत्पश्चात हज़रत रामदत्त जी ने इस उवैसिया सिलसिले को आगे बढ़ाया। यहां उन्हीं के रूहानी जीवन का शब्दांकन है। हम उनके परिवार का इतिहास नहीं लिख रहे हैं। हमारा उद्देश्य उनके रूहानी व्यक्तित्व को उजागर करने तक ही सीमित है। इसलिए उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि का संक्षिप्त वर्णन ही किया जा रहा है।

माता - पिता - श्रीमती सुशीला देवी एवं श्री हरप्रसाद मिश्रा साहब। **ताऊ** - श्री पुष्कर नारायण जी। **चाचा** - श्री फतेह चन्द जी एवं श्री रजनीकांत जी। ये तीनों भी उच्च स्तर के साधक रहे हैं। श्री रजनीकांत जी विगत पांच दशक से बाबा हुजूर की रूहानी सेवा में निरत हैं।

अग्रज - श्री गुरुदत्त मिश्रा; श्रीमती सुमन मिश्रा (धर्म पत्नी) और सुश्री पूजा, नीलम (पुत्रियां) तथा श्री मुनेंद्र दत्त (पुत्र)। **अनुज** - श्री प्रभुदत्त मिश्रा; श्रीमती ममता (धर्म पत्नी) और श्री इन्द्र दत्त (पुत्र)।

बहिनें - सर्व सुश्री चित्रा, लता, मधु, शशि शर्मा (सब विवाहित)।

स्वयं की शिक्षा - बी.कॉम.

रूहानी पथ पर पहला कदम - 8-9 साल की उम्र में बाबा हुजूर के साथ झांसी गए थे।

नाम दीक्षा - पिता - गुरु हज़रत हरप्रसाद मिश्रा 'उवैसी' द्वारा सन् 1968 में।

नौकरी एवं व्यवसाय -
(क). मिलिट्री में सेकण्ड लेफ्टिनेंट के पद पर चयन किंतु दादी ने नहीं जाने दिया।
(ख). एच. एम. टी. अजमेर में स्टोर कीपर के पद पर चयन। यह नौकरी भी हुजूर के रूहानी निर्देश के अनुसार छोड़ दी। नौकरी छुड़वाने के बाद गुरुदेव ने आपको रेडीमेड कपड़ों की दुकान खुलवाई।

पंद्रह वर्ष की उम्र में आप बाबा बादाम शाह के आस्ताने पर जाने लगे। आप, चाचा जी व कुछ अन्य लोग बुधवार की शाम जाते तथा बृहस्पतिवार को प्रातः बाबा साहेब

की समाधि को गुसल दे कर, प्रसाद आदि का भोग लगा कर वापस आते। यह क्रम आगे भी चलता रहा।

विवाह - 6 मई, 1981 में आपका विवाह झांसी निवासी पं. शिवचरण मिश्रा की पुत्री कुमारी सुधा मिश्रा से हुआ।

मंत्र तंत्र की साधना- दस वर्ष की उम्र से ही मंत्र का जाप आरम्भ कर दिया था। बाद में पंद्रह वर्ष की अवस्था में तंत्र साधना शुरू कर दी। पिता श्री हज़रत हरप्रसाद मिश्रा साहब की देख रेख में साधना के पथ पर आगे बढ़ते रहे। गुरु मंत्र सिद्ध किया। कई बार चिल्ले किए। त्राटक का कठोर अभ्यास किया - चांद पर भी त्राटक किया। लगभग चालीस साल तक उनकी साधना अनवरत रही। एक बार गुरुदेव ने ही कहा कि इन्हें तंत्र मंत्र का सम्पूर्ण ज्ञान है।

आध्यात्मिक उत्तराधिकारी - हुजूर के आदेश से गुरुदेव हज़रत हरप्रसाद मिश्रा जी ने आपको अपना रूहानी उत्तराधिकारी बनाने की वसीयत लिख दी थी। वसीयत अपने बड़े पुत्र श्री गुरुदत्त जी को सौंपी और कहा कि इसे मेरे बाद ही सबके सामने खोलना। ऐसे ही जयपुर वाले श्री आर. सी. शर्मा ने किसी दिन गुरु जी को कहा कि आपके बाद कौन इस दायित्व को सम्भालेगा? उन्होंने जवाब में कहा - मैं अपना सब कुछ रामू जी को दे चुका हूं। 2004 के बाद श्री रामदत्त जी श्रद्धालुओं को नाम दान देने लगे थे।

गुरुदेव के कार्यों में सहायता - आश्रम व सोमलपुर वाली दरगाह से संबंधित सारे काम आपने सम्हाल लिये। खर्च का हिसाब-किताब, श्रमिकों को वेतन देना, नेत्र शिविरों की व्यवस्था करना, भण्डारों का प्रबंध करना, झांसी व रामपुर की जियारतों का प्रबंधन आदि कार्य आप देखने लगे। गुरुदेव द्वारा पर्दा फरमाने के बाद उनकी दरगाह का निर्माण भी आपकी ही रूहानी देखरेख में हुआ।

आपने आध्यात्मिक प्रकाश (त्रैमासिक), पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। आप इसके लिए ऑफसेट मशीन लगाना चाहते थे किंतु असामयिक परागमन के कारण ऐसा नहीं हो सका। दिनांक 24 अप्रैल, 2013 को आपने पर्दा कर लिया।

हज़रत का व्यक्तित्व

भौतिक एवं रूहानी, दोनों स्तर पर आपका व्यक्तित्व अद्भुत रहा। आपमें सबके लिए प्रेम का समंदर हिलोरें लेता रहता था। सेवा, परोपकार, मदद आदि आपके पर्याय थे। आपने जो भी किया, दिल खोल कर किया - दरगाह का निर्माण, उत्सव, समारोह, पिकनिक, दान-मान आदि। आपके पास बैठने में सुकून, साथ रहने में आनंद और दृष्टिपात में कल्याण था। आश्रम में आपकी मौजूदगी ही उत्सव जैसी लगती थी। जमकर होली खेलते-खिलाते थे, दीपावली की रात आतिशबाजी कराते थे, शिवरात्रि के दिन ठण्डाई का आनंद बरसाते थे। पिकनिक पर ले जाते थे तो खुद ही ठहाकों में तब्दील हो जाते थे। साधकों के अनुभव वाला सम्पूर्ण अध्याय उनके व्यक्तित्व को ही उजागर करता है।

आप गायन में उस्ताद थे। सूफी कलाम हो या भजन, आपके गायन से सजीव हो जाते थे। आपके जनम के वक्त ही बाबा हुजूर ने कह दिया था कि यह बच्चा बड़ा हो कर अपने पिता की तरह ही गायेगा और बजाएगा (वाद्य संगीत)। आपकी गायकी के समक्ष अच्छे-अच्छे कव्वाल भी पानी भरते थे। तबला बजाने में बेजोड़ और हारमोनियम में सिद्ध हस्त थे।

8. हज़रत का रूहानी व्यक्तित्व

जो मनुष्य रूह बोध में स्थिर रहे वह रूहानी होता है। जिसकी शारीरिक आसक्तियां छूट गई हैं, वही रूहानी है। जो देह के संबंधों से परे हो गया है उसे ही रूहानी कहते हैं। ऐसा महात्मा आत्मस्वरूप में स्थिर रहते हुए दैनिक कार्य करता है और परोपकार में निरत रहता है। उसका खान-पान केवल शरीर तक सीमित रहता है; उसके रूहानी वजूद को प्रभावित नहीं करता है। इसीलिए ऐसा महात्मा कभी भी तामसिक नहीं होता है। हज़रत ऐसे ही थे। दिखता तो इस तरह था कि वे देह पुरुष ही हैं किंतु वास्तव में वे रूहानी ही थे। दैहिक गतिविधियों में अपनी रूहानी हस्ती को छिपाऐ रहे। अपनी रूहानी शक्ति से मुरीदों व अन्य दुखियों के काम करते रहे लेकिन अपने मुकाम की झलक नहीं दिखने दी। यही उनकी खूबी थी।

आप सूक्ष्म शरीर से बाहर निकल कर चाहे जहां चले जाते थे। सूक्ष्म देह में मांस-हड्डी नहीं होते हैं। यह परमाणु रूप होती है। सहस्त्रार चक्र से इस शरीर को बाहर निकाला जाता है। नाम जप करने वाले महात्मा या साधक भी नाम-ऊर्जा के साथ अपने सूक्ष्म शरीर में कहीं भी जा सकते हैं। यह अणु रूप में भी बाहर आता है और देहाकार रूप में भी ऐसा सम्भव है। इस अवस्था में भौतिक शरीर समाधिस्थ जैसी दशा में निश्चल पड़ा रहता है। सावधानी यह रखनी होती है कि उसे कोई छेड़े नहीं। सूक्ष्म देह दूसरों को साकार दिखती है; महात्मा चाहे तो उसे अदृश्य भी रख सकता है। किंतु सक्षम गुरु की नजर के बिना यह खतरनाक कदम है। सूक्ष्म देह यदि स्थूल शरीर में वापस नहीं आ सके तो मनुष्य मर जाता है।

आपने यह भी समझाया कि पर्दा कर लेने के बाद संत या महात्मा कारण शरीर में जीवित रहते हैं। कारण देह प्रकाश स्वरूप होती है। समाधि या मजार इसके लिए आध्यात्मिक टावर जैसा कार्य करती है। वहां से उसके कारण शरीर वाली रुहानी तरंगें दूर-दूर तक फैलती हैं। इसमें मात्र नौ तत्व होते हैं - जीवात्मा के साथ चित्त, मन, बुद्धि, अहंकार। इनके अलावा पांच तन्मात्रा (सूक्ष्म तत्व) - शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध। इस दशा में अपने मुरीदों के सम्पर्क में रहना व उनके काम करना सम्भव है। जिस तरह अनेक चैनल्स हमारे टी.वी. सैट के साथ जुड़े हुए रहते हैं वैसे ही संत भी अपने मुरीदों से जुड़ा हुआ रह सकता है। शब्द तत्व के कारण उसकी आवाज सुनाई देती है (अंतर्वाणी के रूप में)। वायु तत्व (स्पर्श) के कारण उसकी छुअन की अनुभूति सम्भव है। प्रकाश या तेज तत्व के कारण उसके दर्शन सम्भव होते हैं। रस (जल, स्वाद) तत्व के कारण उसका रूहानी प्रक्षालन व भोग में प्रसाद का आनंद सम्भव होता है। गंध तत्व के परिणाम स्वरूप उसकी अनेक खुशबू महसूस होती है - आश्रम में व स्थान के परिसर में अक्सर मोगरा, गुलाब, ऊदी आदि की महक हमें मदमस्त कर देती है। यह उनकी रूहानी उपस्थिति का सूचक होता है। यह सब रामदत्त जी पर भी चरितार्थ होती है!

इस बात का प्रमाण यह है कि आज भी अनेक साधकों के घर में रखी हुई आपकी छवि बोलती है। प्रश्नों के जवाब देती है।

झांसी में हमारे सिलसिले की दो दरगाह हैं। हज़रत निजामुल हक कलन्दर के आस्ताने की बात है। मैं वहां बैठा हुआ था अचानक ही समाधि से रोशनी की मोटी लकीर उठी और रामदत्त जी के विराट शरीर में प्रवेश करती गई। उनकी देह फर्श से छत जितनी

बड़ी थी। ऐसा ही रामपुर में हुआ। हज़रत अल्लानूर खां साहब के आस्ताने में आप मेरे आगे बैठे थे। आपके सामने समाधि थी। मेरी आंखें खुली हुई थीं। मैंने आपके शरीर को पारदर्शी होते हुए देखा। मेरी नजर आपकी देह में से गुजरती हुई समाधि पर टिक गई। वह अद्भुत अनुभूति थी।

एक बार गुरुदेव के आस्ताने में आप हाजिरी दे रहे थे। मैं वहीं था। तत्काल आपको गुरुदेव ने 'रिप्लेस' कर लिया - आपकी जगह गुरुदेव नजर आए। मैं उठा और प्रणाम किया। आप बोले कि 'पिताजी' के आस्ताने में मुझे प्रणाम मत करो। मैंने कहा कि आप नहीं, यहां तो मेरे गुरु जी खड़े थे। उन्हीं को सलाम किया था। दोनों की एकरूपता उस दिन समझ में आई।

कलंदर हाफिज साहेब के आस्ताने में उनसे मेरा रूहानी संवाद हो रहा था। कुछ रहस्य उजागर हुए। लौटते वक्त हज़रत बोले - यहां से जो रूहानी दौलत ले जा रहे हो उसे सम्हाल कर रखना। आप तो बाहर बैठे थे; तो भी आपको सब कुछ ज्ञात हो गया।

साधना का एक दौर ऐसा भी रहा कि मैं हर वक्त रोशनी में से गुजरता रहता था। बाबा हुजूर की एक आंख मुझे देखती रहती थी। किसी दिन आपके पास बैठा था। आपने कहा - रोशनी से गुजर रहे हो, अच्छी बात है। हुजूर की आप पर नजर है। ऐसे ही संध्या के वक्त आप कई बार सूक्ष्म शरीर से हमारे घर में सोफे पर बैठ जाते थे। मुझे कहा भी था कि शाम को 6-8 के बीच मैं आपके घर राउण्ड लेता हूं। इस तरह के अनेक उदाहरण अन्य साधकों के भी रहे हैं।

प्रेत बाधा संबंधी तकलीफ दूर करने के प्रसंग में आपने सोमलपुर वाली दरगाह को 'परा धाम' बना दिया था। प्रति गुरुवार वहां रोगियों का इलाज होने लगा। जिनका 'उतारा' करना होता था, उन्हें बुधवार की रात बुलाते थे। सारा कार्य निःशुल्क होता था। कठिनतम मामले भी वे मुस्कराते हुए सुलझा देते थे।

रूहानी शक्ति से ही आपने अनेक श्रद्धालुओं को रोजगार दिया, व्यवसाय चला दिया, बरकत बढ़ा दी, उद्योग लगवा दिया तथा और भी कई काम किए। आप हर दृष्टि से पूर्ण संत थे।

कोई मनुष्य ऐसे ही फकीर नहीं बन जाता है - अनेक जन्मों में किये गये सकारात्मक कर्मों की निरंतरता उसकी पृष्ठभूमि में होती है। राम जी भी अपने विगत जन्मों की बातें कभी कभार बताते रहते थे। यही कारण है कि मात्र दस वर्ष की उम्र में इन्होंने हुजूर से कह दिया कि मैं भी जप करना चाहता हूं। चौदह वर्ष की अवस्था में तो गुरुदेव ने इनसे एक उतारा करा दिया था। आगे के दस साल में अनेक मंत्र व चिल्ले बख्शीश हो गए। तत्पश्चात अपने पीर के साथ रूहानी यात्राएं करने लगे। आपमें अनेक शक्तियां सक्रिय हो गईं - दूसरों के मन की बात जान लेना, दूर की बात सुन लेना व देख लेना, अला-बला उतार देना, संकल्प से दूसरों के अटके हुए काम करा देना, सूक्ष्म शरीर से बाहर कहीं भी चले जाना आदि। बाबा हुजूर इन्हें अपने पास बुलाते रहे और गुरुदेव अपने साथ चलाते रहे। बड़े दरबार (रामपुर व झांसी) में जियारत होती रही। इस तरह रूहानी ताकत बढ़ती ही गई अपने पिता-गुरु के सामने ही ये परिपक्व हो चुके थे। आपको अनेकानेक प्रणाम।

9. साधकों के रूहानी अनुभव

(1). साध्वी के गुरु का इलाज - आश्रम में एक बार कोई साध्वी आईं थीं। उनके गुरु भी साथ थे। उन पर किसी ने तांत्रिक वार किया था। उसका इलाज नहीं हो सका। आश्रम के ही एक साधक श्री सुरेंद्र सिंह शेखावत उन्हें हज़रत की शरण में लाए।

साध्वी जी पहले गुरुदेव के आस्ताने में गईं। लौट कर हज़रत से बोलीं - अंदर तो अपार ओरा (Aura) है। मैंने ऐसा अन्य कहीं नहीं देखा। हज़रत मुस्करा दिए। फिर उन्हें राम जी का ओरा (Aura) दिखा। उस वक्त वहां 30-40 श्रद्धालु मौजूद थे। सब के सब उस ओरा (Aura) की परिधि में थे। साध्वी वहां भी आश्चर्य चकित हुईं। वे पुनः बोलीं - स्वयं आपका ओरा (Aura) भी कम नहीं है। आपकी तो नजर से ही इनके काम हो रहे हैं। हज़रत चुप ही रहे। उन्होंने साध्वी जी के गुरु का इलाज कर दिया।

(2). हमारा नहीं, गुरु का ध्यान करो - एक बार घर पर प्रभुदत्त जी अपने भैया जी का ध्यान कर रहे थे। ध्यान स्थिर हुआ। आनंद आया। दूसरे दिन उक्त बात हज़रत को बताई। उन्होने टोक दिया - ध्यान हमारा नहीं, अपने गुरु का करो। उनके दीक्षा गुरु हज़रत हरप्रसाद मिश्रा उवैसी हैं।

(3). अंगूठे का नाखून काला पड़ गया - हज़रत अपने पीर साहब के पास बैठे थे। उनके पांव के अंगूठे पर नजर पड़ी तो देखा कि नाखून काला पड़ गया है। उन्होंने पीर साहब से इसका कारण जानना चाहा। उन्होंने कहा - रोज रोज ये पांव छूने वाले खुद

के अशुद्ध विचारों का कचरा हमारे कदमों पर पटक जाते हैं। यह उसी का परिणाम है। फिर कहा कि तुम स्वयं को बचा कर रखो।

(4). गुरु की नजर - एक बार हज़रत की तबीयत ज्यादा बिगड़ गई। हीमोग्लोबिन चार ही रह गया। जे. एल. एन. अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। उन्हीं दिनों दिल्ली से श्री महेंद्र मिश्रा इनके घर आए। वे अनुपम कुण्डलिनी विशेषज्ञ थे। उन्होंने गुरुदेव को कहा कि राम जी ने किसी की पीड़ खुद पर ले कर उतारी है। इसी कारण बीमार हुए हैं। खैर, वे घर आ गए। बहुत कमजोर थे। उधर हुजूर का भण्डारा था। राम जी तो ठीक से बैठ भी नहीं सकते थे। किंतु गुरुदेव ने उन्हें स्थान बुलाया और अपने पास बिठा लिया। उनकी नजर से राम जी पूरी रात सीधे के सीधे बैठे रहे थे।

(5). दोहरी कृपा - उन दिनों श्री महेंद्र जी यहां आए हुए थे। वे पिता जी के साथ ऊपर वाले कमरे में ठहरते थे। राम जी दुकान से आए। पेट भर कर भोजन किया। ज्यादा खाने से थोड़े असहज हो रहे थे। उन्हें महेंद्र जी ने ऊपर वाले कक्ष में बुलाया। उनके सिर पर हाथ रखा। कुण्डलिनी जगा दी। राम जी रात दस बजे से सुबह चार बजे तक ध्यान मग्न बैठे रहे। ध्यान टूटते ही जोरदार भूख लगी, सारा भोजन हजम हो गया था।

(6). कैफ की अनुभूति - प्रभुदत्त जी व अन्य साधक रामपुर गए हुए थे। बाबा लक्ष्मण दास जी की दरगाह (बगीची) में महफिल का आयोजन था। महफिल के दौरान हज़रत ने प्रभु जी पर रूहानी नजर डाली। इनके शरीर में जैसे करण्ट दौड़

गया। वे उठ कर खड़े हो गए। आपने कहा कि मैंने उस दिन पहली बार कैफ की अवस्था का अनुभव किया था।

(7). उसके दिल की पीड़ा, इनकी एड़ी में - आश्रम में नेत्र - शिविर का आयोजन था। रोगी भर्ती हो चुके थे। रात के वक्त कुछ सेवक हज़रत के पास बैठे थे। तभी एक महिला रोगी को हृदयाघात हुआ। डॉक्टर उसके उपचार की तैयारी करने लगे। इधर हज़रत ने ध्यान लगाया। फिर पास में बैठे हुए मनोज को कहा - मेरी एड़ी दबाओ। मेरे यहां दर्द हो रहा है। वस्तुतः उस स्त्री की पीड़ा को आपने अपनी एड़ी में उतार लिया था। उधर वो रोगी ठीक हो गई। हज़रत इतने दयालु थे।

(8). परम सौभाग्य - यह अनुभव श्री ओम जी के पुत्र अनुराग जैन एवं उनके चचेरे भाई सौरभ जैन का है। इनके लिए 'गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु' वाला श्लोक सजीव है। आप बहुत भाग्यशाली हैं; सरकार रामदत्त जी के रूहानी दर्शन आपने पिताजी के आस्ताने में किए। आपकी नियमित साधना एवं निरंतर सेवा भाव के कारण ही ऐसा सम्भव हुआ।

एक बार ये अपने अनुराग भाई के साथ आश्रम गये। दीवाली का दिन था। दशहरे के दिन इनकी माता जी का स्वर्गवास हो गया था। इस कारण घर पर दीवाली तो मनाई नहीं किंतु सरकार का आशीर्वाद लेने आश्रम पहुंच गए। सायंकाल साढ़े छह या सात बजे का समय रहा होगा। उस वक्त वहां कोई नहीं था; इस दिन साधक गण रात आठ बजे के बाद ही आते हैं। तो दोनों ने आस्ताने में प्रवेश किया और गुरुदेव की समाधि पर धोक लगाने के लिए आगे बढ़े। बस तभी नसीब ने इन दोनों को निहाल करने की

ठान ली। इन्होंने देखा कि सरकार वहां गुरुजी की समाधि के दाहिनी तरफ बैठे हुए हैं। दोनों में संवाद चल रहा है। दोनों के स्वर मानो आस्ताने में गूंज रहे हैं। ये तो स्तब्ध रह गये। ऐसे दृश्य की कभी कल्पना ही नहीं की थी। संत की समाधि को बोलते हुए देखने का सौभाग्य इनके लिए अकल्पनीय था। दोनों जड़वत हो गए। तभी सरकार को इनकी उपस्थिति का अनुभव हो गया। उन रुहानी क्षणों में वहां कौन आया है! उन्होंने इनकी तरफ देखा - आँखों में निवर्चनीय जलाल था; असहनीय तेज था । दोनों को लगा कि भस्म हो जाएंगे। सौरभ तो डर गए और बाहर जाने लगे। किंतु अनुराग ने फुसफुसाते हुए समझाया कि यह सब सरकार की मर्जी के बिना घटित होना असम्भव है। इसलिए वे चुपचाप वहीं आसन पर बैठ गए। थोड़ी देर बाद सरकार अपने कक्ष में चले गए। तत्पश्चात ये दोनों भी सहमते - सकुचाते हुए उनके कक्ष में गए। वे मुस्करा रहे थे, दोनों को आश्वस्त कर रहे थे। फिर इनसे बातें करने लगे। दोनों सहज हुए तब इनका माथा चूमा और विदा किया।

गुरु के ऐसे दर्शन दुर्लभ होते हैं। झांसी में एक बार श्री फतेहचंद जी मिश्रा के साथ भी नसीब ने ऐसी ही कृपा की थी - आधी रात के वक्त उनकी नींद उचट गई। देखा कि हुजूर अपने बिस्तर पर नहीं हैं। उठ कर उन्हें तलाश करते हुए हज़रत निजामुल हक कलन्दर के आस्ताने तक पहुंच गए। द्वार एक झिर्री जितना सा खुला हुआ था। अंदर से आवाज आ रही थी। जिज्ञासावश उन्होंने झिर्री में से अंदर झांका। देखा कि हुजूर अपने पीर साहब की समाधि के पैताने खड़े हैं, उनसे बात कर रहे हैं। एक क्षण बाद ही वे इसे अनुचित समझ कर वहां से चले गए। दूसरे दिन हुजूर ने पिताजी से कहा कि 'फत्ते' को आगे की रूहानी चढ़ाई के लिए कोई मंत्र दे दो।

(9). एक अद्भुत प्रसंग - आश्रम की बात है। गुरुदेव के आस्ताने में हज़रत के साथ उस दिन सर्वश्री पंकज जोशी, भूपेंद्र ठाकुर, अंजू ठाकुर, योगेश शर्मा व अन्य दो साधक बैठे हुए थे। हज़रत के पीछे पंकज जोशी थे। उस दिन इन सबको हज़रत ने कोई गोपनीय मंत्र दिया। फिर वे पूरी तरह रूहानी हो गए। समाधि से बात करने लगे। बीच-बीच में बोलते जा रहे थे कि नहीं हुजूर, यह नहीं हो सकता, यह तो बेअदबी होगी, नहीं नहीं....(बाद में उन्होंने खुलासा किया कि पिताजी उन्हें आस्ताने वाले तख्त पर बैठ कर छवि खिंचवाने के लिए कह रहे थे)। यह तख्त बाबा बादामशाह साहब का है। उन्होंने यह अपने मुरीद हज़रत हरप्रसाद जी को दिया और कहा कि इस पर बैठ कर इबादत किया करो। गुरुदेव के पर्दा करने के बाद इसे उनके आस्ताने में यहां रख दिया गया। उस दिन उसी तख्त पर हज़रत को बैठने का रूहानी आदेश हुआ था।

दस मिनट बाद वे उठे और छवियों वाली ताक के पास रखे हुए तख्त पर पैर लटकाए हुए बैठ गए। इसके बाद अर्द्ध पद्मासन जैसी अवस्था में दोनों पैर व्यवस्थित करते हुए बैठ कर ताक में शोभित छवियों की तरफ देखते रहे। उनके चेहरे व आँखों में रूहानी जलाल था; अद्भुत, विलक्षण, अनिर्वचनीय। थोड़ी देर में कुछ सामान्य हुए। तब सुधा भाभी को बुलवाया। उसी दिन उनकी तख्त पर बैठे हुए वाली अद्भुत छवि खींची गई थी जो आज सबके लिए यादगार है।

(10). आस्ताने में मालामाल - गुरुवार का दिन था। श्री रामदत्त जी हुजूर की समाधि को गुसल देने के बाद वहीं ध्यान में बैठ गए। वे अपने मंत्र का जाप कर रहे थे। तभी हुजूर की आवाज सुनी; भीमसेन! यह जपो। कोई गोपनीय मंत्र दिया। उवैसिया बुजुर्गों

की सहमति से ऐसा किया। मतलब कि उन्हें सबने आगे के लिए स्वीकार किया। यह बहुत बड़ी कृपा थी। उन्होंने आश्रम में गुरुदेव को बताया। वे बोले कि यह तो अच्छी बात है। हुजूर ने जो कहा है वह करो। आप बोले - किंतु मेरे पीर तो आप हैं। आपका आदेश मेरे लिए सर्वोपरि है। उनके ऐसे अदब से गुरुदेव बहुत खुश हुए।

(11). अद्भुत सांप - अजमेर के निकटवर्ती गांव जिलावड़ा से पहले बावड़ी वाले बाबा का स्थान है। वहां हैदर अली साहब की दरगाह बनी हुई है। एक बार वहां बाबा का समारोह था। गुरुदेव, हज़रत व अन्य कई साधक वहां ठहरे। भीड़ बहुत थी। अनवार कव्वाल भी वहां थे। भीड़ के कारण गुरुदेव पीछे की ओर बैठ गए। तब रामदत्त जी ने दादा हुजूर का ध्यान किया। थोड़ी ही देर बाद बीच में से भीड़ अपने आप हट गई। वस्तुतः हुआ यह कि हुजूर से अरदास के बाद हज़रत को एक मोटा व अत्यधिक लम्बा सांप करवटें लेता हुआ दिखा था। उस रूहानी शक्ति के प्रभाव से गुरुदेव के सामने वाली सीध में जगह खाली हो गई।

(12). झांसी में ऐसा भी हुआ - गुरुदेव, रामजी व अन्य अनेक साधक झांसी गए हुए थे। महफिल के दौरान राम जी में गजब का जलाल आया। वे झटके से उठे। दादा हुजूर के आस्ताने में गए। उनकी समाधि से चिपकते हुए करवट के बल लेट गए और दाहिने हाथ से मानो पूरी समाधि को बाहं में समेट लेने की कोशिश करने लगे। लगभग दस मिनट तक ऐसा ही अद्भुत आलम रहा। कोई कुछ नहीं समझ सका। इसका खुलासा भी उन्होंने प्रभुजी के सामने किया - मुझे दादा साहब अपनी समाधि के अंदर खींच रहे थे। कमाल। मुझे याद आ रहा है औलिया निजामुद्दीन का वह कथन - यदि मुझे अधिकार होता तो मैं अमीर खुसरो को अपने साथ अपनी ही कब्र में

लेटने की जगह देता। वे अपने जांनशीं खुसरो को इतना ज्यादा चाहते थे। अवश्य ही राम जी भी दादा हुजूर के दिल में बसे हुए थे।

(13). मोशाय बाबू ने कहा कि विलक्षण पुरुष - कलकत्ता की तारा दुग्गड़ - श्री निरंजन दोसी एक बार कलकत्ता से किसी महिला श्रीमती तारा दुग्गड़ को हज़रत की शरण में लाए। उसकी पुत्रवधू के दोनों पैर बेकार हो गए थे। वह चल नहीं सकती थी। हज़रत ने उसका इलाज किया। उस महिला के घर कोई बंगाली बाबा आते थे। उनका नाम मोशाय बाबू था। उन्होंने पूछा कि बहू का कोई इलाज करा रहे हो क्या? इन्होंने सारी बात बता दी। तब ध्यान लगा कर उन्होंने राम जी की आकृति और आश्रम का आकार प्रकार बता दिया। फिर बोले कि वे विलक्षण दिव्य महात्मा हैं जो इस तारा का इलाज कर रहे हैं।

(14). चिदाकाश में बाबा हुजूर - हज़रत ने अपना यह रूहानी प्रसंग भी प्रभुदत्त जी को बताया था। बाबा हुजूर का भण्डारा था। गुरुदेव उस वक्त हयात में थे और गद्दी की शोभा बढ़ा रहे थे। राम जी उनके पास ही थे। महफिल धीरे-धीरे रवां हो रही थी। इनके हाव-भाव से स्पष्ट हो रहा था कि अन्दर कैफ बढ़ रहा है। अचानक ही आपने गुरुदेव के कान में कुछ कहा। उनके चेहरे पर भी रूहानी चमक कौंध गई। समझा कोई कुछ नहीं। दूसरे दिन रामदत्त जी ने अपने छोटे भाई प्रभुदत्त जी को खुलासा किया - मेरे आज्ञाचक्र पर एक बिंदु झलकने लगा और बाबा हुजूर कह रहे थे कि भीमसेन देखो! हम इस बिंदु में कैसे हैं और संसार में किस तरह समाए हुए हैं। वह बिंदु क्रमशः बड़ा होता गया। बड़ा होते-होते ब्रह्माण्ड जितना फैल गया। इसी फैलाव को चिदाकाश कहते हैं। उस चिदाकाश में अकेले बाबा हुजूर विराजमान थे। वे

ब्रह्म-पुरुष जैसे लग रहे थे। हुजूर के उस रूहानी स्वरूप के दर्शन से वे निहाल हो गए। ऐसा विलक्षण करम उन पर गद्दीनशीन होने से पहले ही हो गया था। प्रभु जी ने सुना तो मानो उनके हृदय में राम जी का भावी हज़रत वाला रूप साकार हो गया।

सुधा भाभी

श्रीमती सुधा मिश्रा, श्री रामदत्त मिश्रा की धर्म पत्नी हैं। आश्रम में उन्हें सब सुधा भाभी कहते हैं। शादी के बाद एक दिन इन्हें अचानक ही ज्ञात हुआ कि इनके पति तो ऊंचे दर्जे के साधक हैं और रूहानी पथ पर आगे बढ़ते जा रहे हैं। रामदत्त जी गहरे ध्यान में थे। सुधा जी को इनसे कोई जरूरी काम था। इन्होंने उन्हें झकझोरा। वे चमक कर कसमसाए - मुझे ऐसी दशा में फिर कभी मत छेड़ना। बाद में असलियत समझा दी।

ऐसे ही एक बार वे इनके साथ जयपुर गईं। और लोग भी थे। राम जी बहुत गहरे ध्यान में डूब गए। एकदम निश्चल। सुधा जी घबरा गईं। उन्हें जोर से झकझोरा। आप आज्ञा चक्र से नीचे उतरे। उस दिन भी समझाया कि वे ध्यान में कहीं अन्यत्र चले जाते हैं।

एक बात श्री पंकज जोशी ने बताई - भैया भाभी शादी से लौटे थे। भाभी अपने जेवर आदि रखने के लिए भीतर वाले कमरे में चली गईं। तब राम भैया न जाने कौन सी धुन में बोले; मैं जहां हूं, सुधा भी वहां है। जब तक हम हैं, तब तक सुधा भी है। तात्पर्य - वे देह में रहें या रूह में, सुधा जी पर उनकी नजर रहेगी। वे अक्सर इन्हें

साधना के लिए कहते थे। सुधा जी ने अभ्यास भी किया। हज़रत ने एक बार इन्हें ध्यानावस्था में बहुत ऊपर चढ़ा दिया। ये किसी दिव्य मुकाम तक पहुंच गईं। किंतु उसे पहचान नहीं सकीं। बाद में हज़रत ने ही खुलासा किया कि वह गुरुदेव का मुकाम था।

राखी वाला दिन था। आप हज़रत के आस्ताने में बैठी थीं। अचानक ही हज़रत की आवाज गूंजी, सुधा। ये हड़बड़ा गईं; समझीं कुछ नहीं किंतु हज़रत ने उस दिन अपनी ही कही हुई बात को प्रमाणित किया कि 'मैं जहां हूं, सुधा भी वहां है'।

इनके लिए अब आश्रम में ही एक अलग आवासीय कक्ष है; सर्व सुविधा सम्पन्न। हज़रत के मुरीद इनसे मिलते रहते हैं। श्रीमती अंजू ठाकुर ने हमें बताया कि उन्हें अभी भी ध्यानावस्था में हज़रत के साथ भाभी ही दिखती हैं; भैया अकेले नहीं। उनके अनुसार, 'सुधा भाभी उदार, सरल, स्पष्टवादी एवं मिलनसार हैं। स्वयं उन्हें भी भैया के दर्शन होते रहते हैं। आप हज़रत के साथ रामपुर एवं झांसी की जियारत करती रही हैं।

10. मेरी अनुभूतियां

मैं हज़रत हरप्रसाद मिश्रा साहब से दीक्षित हूं। वे मुझे अपना मानस पुत्र कहते थे। इसलिए राम जी के साथ मैं दुनियावी स्तर पर ज्यादा नहीं जुड़ सका। उनसे जोड़ने के लिए ही शायद गुरुदेव ने मुझे राम जी की रूहानी हस्ती के दर्शन कराए - निजामुल हक कलंदर साहब के आस्ताने (झांसी) में राम जी का विराट रूप देखना, अल्लानूर खां साहब के आस्ताने में उनका पारदर्शी शरीर देखना, अपने घर में उनके रूहानी वजूद को उपस्थित देखना, चिदाकाश में उनके साथ ऊंची रूहानी यात्रा करना आदि। ये सब बातें मेरे गुरुदेव के पर्दा फरमाने के बाद की बातें हैं।

गुरु जी ने मुझे एक बार कहा कि उनमें और राम जी में कोई भेद नहीं है। इसके उपरांत भी मैं उनके साथ अंतरंग नहीं हो सका। फिर भी उन्होंने मुझे स्वयं से जोड़ा ये अवश्य ही उनकी कृपा है।

उन्होंने आश्रम में प्रति रविवार कार सेवा आरम्भ की। मुझे कहा - आप तो पिताजी के आस्ताने में इबादत करें। कई बार खुद के कक्ष में ही ध्यानस्थ कर देते थे।

शिवरात्रि, गुरु पूनम आदि के अवसर पर कहते - आप बोलो, उपस्थित श्रद्धालुओं को महत्व की बातें बताओ। एक बार बाबा हुजूर के आस्ताने में मेरे सामने (मेरे एवं समाधि के मध्य) बैठ गए। अपनी रूहानी ताकत से मुझे समाधि के भीतर देखने की शक्ति दे दी। फिर जब मैं चाचा जी वाले कमरे में आया तो हज़रत ने सबके सामने

कहा - समाधि में क्या देखा? मैं बोला - जी प्रकाश ही प्रकाश, ज्योति ही ज्योति। आपने कहा, शाबास।

एक एक्सीडेंट के कारण मेरे बाईं तरफ वाले घुटने में दर्द रह गया। साधना में लम्बी बैठक नहीं होती थी। आप सोमलपुर वाले सत्संग कक्ष में थे। मुझे बुलाया और कहा - मेरे पांव पर अपना पैर रखो। तीन बार ऐसा कहा तो मैंने आदेश का पालन किया। आपने घुटने पर हाथ रखा और दर्द दूर कर दिया।

आश्रम वाले शिव मंदिर में शिव विग्रह की स्थापना का समारोह था। फिर आरती के वक्त मैं आपके पास खड़ा था। मैंने आसमान से शिव ज्योति को उतरते हुए देखा। शिवलिंग एवं आकाश तक एक दिव्य रेखा बन गई। आपकी कृपा स्वरूप साक्षात महादेव के दर्शन सम्भव हुए।

किसी दिन रात में आश्रम ही ठहर गया। गपशप में रात के बारह बज गए। आप उस समय सोमलपुर वाली दरगाह में थे। अचानक ही आप सामने आए और बोले - इसलिए आश्रम आए हो क्या? जाओ, इबादत करो। मैं आश्रम में कभी भी ऐसा नहीं करता था। उसी दिन मेरी मति मारी गई थी और तत्काल फटकार मिल गई।

किसी दिन मौज में थे। सत्संग कक्ष में अन्य साधक भी मौजूद थे। मुझे संकेत करते हुए प्रश्न किया - बताओ हम दोनों पिछले जनम में कहां मिले थे? मैं ऐसा रहस्य पर्दे में ही रखना चाहता था इसलिए चुप रह गया। आपने दोबारा टोका, बताओ; हम कह

रहे हैं। तब मैं बहुत धीमे से बोला, जी रामपुर में। हमारे नाम....। तत्काल आंखों से मना कर दिया - आगे मत बोलो।

हज़रत हाफिज मोहम्मद इब्राहीम साहब का 'दिन' था। प्रसादी के लिए कमरे में प्रवेश किया। आप बोले - शिव जी भाई साहब! आप मेरे पास ही बैठो। प्रसादी आरम्भ होने से पहले शक्तिपात किया तथा बोले - बताओ, क्या दिख रहा है? मैं किसी सूक्ष्म लोक में था। चारों तरफ अलौकिक ज्योति थी। कई बुजुर्ग वहां दिव्य रूपेण मौजूद थे। मैंने सारी बात बता दी। आगे के लिए मना कर दिया।

हज़रत के साथ रामपुर जाने का अवसर मिला। आठ दस गुरु भाई भी साथ थे। लौटती बार दिल्ली में स्व. श्री महेंद्र मिश्रा के घर ठहरे। वहां उनकी पत्नी व पांच सात स्थानीय साधक भी आ गए। नाश्ते के बाद राम जी ने अचानक ही मुझे आदेश किया कि इन सबके रूहानी प्रश्नों के जवाब दो और पिताजी के विषय में कुछ बताओ। मैं आरम्भ में तो थोड़ा हिचका किंतु हज़रत की नजर काम कर रही थी। इस कारण लगभग पौन घंटा सत्संग चला तथा सबकी जिज्ञासाएं शांत हुईं। संत महात्मा इस तरह किसी का मान बढ़ा देते हैं। हज़रत तो ऐसा कई बार करते थे।

एक दिन आश्रम में ही हम उनके साथ चल रहे थे। बीस तीस अन्य श्रद्धालु भी थे। पता नहीं उन्हें क्या मौज आई! मेरा हाथ पकड़ कर बोले - मैं एक बार जिसका हाथ पकड़ लेता हूं तो फिर छोड़ता नहीं हूं। इसका मतलब उस दिन समझ में आया जब रूहानी जगत में आपने मेरे सामने ही गुरुदेव को कहा कि शिव जी कोई गलत काम कर ही नहीं सकते हैं। वे इतने महान थे।

झाँसी की जियारत का कार्यक्रम बना। मुझे आश्रम में ही ठहरने का हुक्म हुआ। प्रस्थान के वक्त आप मेरे पास आए और बोले - वहां की महफिल व अन्य सारे नजारे आपको यहीं नजर आएंगे; ऐसा ही हुआ। उन तीन दिन की आनंदानुभूति अनिर्वचनीय है।

बाबा साहब का भण्डारा था। महफिल चल रही थी। मैं हज़रत से किसी बात पर रूठा हुआ था। इसलिए बाहर दालान में टहल रहा था। रात साढ़े ग्यारह बजे एक गुरु भाई आया। वह बोला कि भैया हुजूर बुला रहे हैं। आपने मुझे खुद के एकदम नजदीक बिठाया। गिने बिना ही नोट दिये और बोले कि कव्वालों को नजर करो। जाहिरा तौर पर इतना ही हुआ किंतु रूहानी स्तर पर वह मेरा नसीब था। आप ऊपर चढ़ाते रहे और मैं रूहानी धुन में आनंद लेता रहा। सैकड़ों श्रद्धालुओं के सामने इस नाचीज को इतना मान दिया। वाकई में वे अपने आप में बादशाह थे। ऐसे ही एक बार गुरुदेव के भण्डारे से पहले वाली मिलाद शरीफ का अवसर था। मैं सबसे पीछे बैठा हुआ था। आपने आवाज दे कर आगे बुलाया और खुद के पास बैठने के लिए कहा। उतनी ही देर में गुरु भैया ने अपने पास बिठा लिया; अपनी गद्दी शेयर करते हुए मेरा मान बढ़ाया। ऐसे अनेक मामलों में गुरुदत्त जी भी बेमिसाल रहे हैं। आठ दस साधकों को हज़रत के साथ रामपुर जाना था। मुझे ज्ञात नहीं था। गुरु भैया ने हज़रत को कहा कि वे मुझे भी अपनी गाड़ी में ले चलना चाहते हैं। इस तरह मेरा रामपुर जाना हुआ। उस यात्रा में गजब की रूहानी अनुभूतियां हुईं। लौटती बार रमन भाई के घर ठहरे। रात में वहां बू अली कलंदर साहब की रूहानी रहमत ने निहाल कर दिया। यदि गुरु भैया मुझे रामपुर ले जाने वाली कृपा नहीं करते तो मैं इस तरह 'बानसीब' नहीं हो पाता।

उन्होंने अपने पिता गुरु हज़रत हरप्रसाद मिश्रा साहब से सीखे हुए कई रूहानी रहस्य भी मुझे बताए। ऐसा अन्य किसी से सम्भव नहीं था। अतः गुरुदत्त जी को प्रणाम। हज़रत ने मुझे चिल्ले पर बिठाया। बीच में एक दिन कचौरी खिला दी। फिर बोले कि आपका चिल्ला कबूल हो रहा है। कितना अद्भुत खेल था! चुपचाप सब कुछ कर दिया। यह आलम तो तब है जब मैनें आरम्भ में उन्हें समझने का प्रयास ही नहीं किया। उनसे नाराज भी होता रहता था। किसी गुरुवार के दिन मैं स्कूटी से अकेला ही सोमलपुर पहुंच गया। आप सत्संग कक्ष में थे और आस्ताने में साफ-सफाई के अंतिम दौर का काम चल रहा था। गुरु भैया ने मुझे आश्रम वाले आस्ताने में जाने से कभी नहीं टोका। मेरी यही आदत बन गई। मैनें राम जी को कहा कि मैं आस्ताने में जाऊं! वे बोले, थोड़ी देर ठहरो। बस, मैं बिदक गया। उनसे बोले बगैर ही जैसे हवा में उड़ता हुआ आश्रम पहुंच गया। मुझे नहीं पता कि उस दिन स्कूटी किसने चलाई! आस्ताने में फातिहा चल रहा था। उधर गुरुदेव की आवाज आई - क्या करते हो बेटा! आज रामू जी की नजर नहीं होती तो तुम मर जाते। मैं शांत हुआ। हज़रत महान थे और हैं।

वस्तुतः प्रत्यक्ष तौर पर मैं हज़रत के नजदीक नहीं रहा। बहुत कम मिलना होता था। उनके होली दीवाली वाले उत्सवों में भी मैं कभी सहभागी नहीं रहा। किंतु रूहानी जगत में उन्होंने अनेक बार मुझे नवाजा। कुछ ऐसी बातें भी कहीं जिनको नहीं लिखा जा सकता है। एक बार मेरे सूक्ष्म शरीर को अपनी रूहानी हस्ती के साथ ले गए। बहुत ऊपर चले जाने के बाद अचानक ही हम दोनों के मध्य एक फीट का फासला बन गया। ऊपर अधर में स्थित आपने कहा कि भाईसाहब! अब ऊपर उठो। अपना हाथ नीचे लटका दिया - ऊपर उठ कर मेरा हाथ पकड़ लो। मैं अब नीचे नहीं आ

सकता हूं। मैंने कहा - और मैं अब और अधिक ऊपर नहीं उठ सकता हूं। तब आप बोले, ठीक है; अभी और ज्यादा साधना करो। दो दिन बाद जब आश्रम में मिलना हुआ तो कहा - मैं जो कुछ आपको दे सकता था, दे दिया है। ऐसे दयालु महात्मा को शत शत प्रणाम।

11. साधकों के अनुभव

(1). श्री भूपेंद्र सिंह ठाकुर (भूपी) एवं श्रीमती अंजू ठाकुर - ये दोनों ही हज़रत के परम शिष्य रहे हैं। एक दौर ऐसा था जब राम जी के दिन का आरम्भ भूपी द्वारा की जाने वाली सेवा से होता था। सुबह का भोजन अक्सर दोनों साथ करते थे। उधर अंजू को तो वे पूर्व जन्म की बेटी बताते थे। अंजू को आपने स्वयं के विराट रूप के दर्शन कराए और अपने ही रूप में सूफीयत के आदि महात्मा की झलक दिखाई थी। यह बड़े नसीब की बात है।

यहां इनके कुछ अनुभव प्रस्तुत हैं -

आरम्भ में पैसे की तंगी थी। फिर भी हज़रत ने चंद्रवरदाई नगर में मकान बनाने के लिए कह दिया। किंतु आपकी नजर से सारा काम हो गया। करम ऐसा कि जमीन आपने पसंद की, भूमि पूजन आपने किया, मकान में गृह प्रवेश का मांगलिक कार्य आपने ही सम्पन्न किया, मंदिर का निर्माण आपकी नजर से हुआ, उदघाटन भी आपने ही किया और पैसे का जुगाड़ भी आपकी ही कृपा से होता गया। सवा करोड़ की लागत वाला घर कैसे बन गया, पता ही नहीं चला। फिर मकान के नांगल की बात आई। निर्माण कार्य की फाईनल टचिंग एवं नांगल को मिला कर दस लाख का खर्चा था। इस बार भी पैसे नहीं थे लेकिन आपने 15 सितम्बर की तारीख तय कर दी। हज़रत का आदेश और भक्त की परीक्षा। चुपचाप घर का सोना बेच कर सारा प्रबंध किया गया। राम जी बोले, चिंता मत कर; तुझे ऊपर से नीचे तक गहनों से लाद दूंगा। मालिक का कहा हुआ सच ही होता है। घर में समृद्धि बढ़ती ही रही।

घर में मंदिर की स्थापना होनी थी। उन्हीं दिनों आश्रम में गुरुदेव के आस्ताने का भी काम चल रहा था। छवियों वाली ताक में लगाने के लिए संगमरमर खरीदा गया। उस पत्थर को कार्य समिति के एक भक्त ने रिजेक्ट कर दिया। वही पत्थर भूपी भाई के घरेलू मंदिर की ताक में लगा दिया गया। वह आज भी निर्दोष है। ऐसा क्यों हुआ! यह तो राम जी ही जानें।

एक बार झांसी जाने का कार्यक्रम बना। अंजू को उसके पीहर मुरैना छोड़ दिया। वहां एक अद्भुत करम हुआ। श्रीमती अंजू अच्छी साधिका रही हैं। उन्हें योग निंद्रा में रामदत्त जी के विराट स्वरुप के दर्शन हुए। उस दृश्य में अनेक अनजान साधक उपस्थित थे। हज़रत सबके सिर पर चिमटा मारते जा रहे थे। अंजू के सिर पर भी ऐसा ही किया। ऐसे ही उन्होंने राम जी का अद्भुत रूप देखा - सूफीयत के आदि पुरुष के दर्शन किये। अजमेर में उक्त घटना का जिक्र करते हुए हज़रत बोले कि 'चिमटा जोर से तो नहीं मारा था'। वस्तुतः यह भी शक्तिपात का एक तरीका है। इस क्रिया से भी साधक का आज्ञा चक्र सक्रिय किया जाता है। यह श्रीमती अंजू पर उनकी रूहानी कृपा थी जो बहुत कम साधकों को नसीब होती है। .....एक दिन मौज में थे; बोले कि अंजू पूर्व जनम में मेरी बेटी थी।

कभी श्रीमती अंजू को पथरी का दर्द उठा। डॉक्टर की दवा ली। आराम हुआ। दूसरे दिन श्री भूपी आश्रम चले गए। पीछे से दर्द वापस उठा। इस बार बहुत तेज पेन था। भूपी ने हुजूर को कहा कि उन्हें घर जाना पड़ेगा। हज़रत बोले - उसे आश्रम ले आओ। ऐसा ही किया गया। आपकी नजर से ही दर्द मिट गया। उस दिन के बाद कभी भी वैसा दर्द नहीं उठा।

एक दिन हंसते हुए बोले - देख अंजू; तेरे बेटे की शादी में तो मैं पांचों कपड़े लूंगा। बेटी के विवाह में लूंगा कुछ नहीं किंतु सारे समय अपनी नजर रखूंगा।

श्री राम जी मेदांता अस्पताल में भर्ती थे। स्वस्थ हुए। दो ढाई माह से स्वादिष्ट भोजन नहीं किया था। इसलिए श्री भूपी को कहा कि दाल एवं आलू-गोभी की सब्जी बनाओ। कुछ अन्य साधक भी मौजूद थे। अब हुआ यह कि दाल-सब्जी में धनिये की जगह भरपूर गरम मसाला डाल दिया। खाना परोसने से पहले भूपी ने सब्जी चखी तो सिहर गया। बुरी तरह रो दिया - अब क्या होगा! मालिक दो माह बाद तो घर जैसा भोजन करेंगे; और मुझसे ऐसी अक्षम्य भूल हो गई। तभी भोजन परोसने का आदेश हो गया। रोते सुबकते हुए भूपी जी ने हुजूर की थाली लगाई । अन्य मुरीदों का भोजन भी परोसा गया। हुजूर ने पहला ग्रास खाया और बोले - वाह! इतनी स्वादिष्ट दाल पहले कभी नहीं खाई। फिर सब्जी चखी तो भी बोले - बहुत स्वादिष्ट सब्जी है; वाह!.....अन्य लोग 'सी सी' कर रहे थे किंतु फकीर की महानता यह कि उन्होंने कुछ नहीं जताया। दो बार दाल और दो बार ही सब्जी ली।

हज़रत की इन पर कृपा का यह आलम है कि पूरा घर मंदिर जैसा लगता है - वहां रूहानी कशिश है, शांति है।

(2). श्री पंकज जोशी - देर से आए और बहुत जल्दी राम जी के चहेते बन गए। एक दिन कुछ साधकों के साथ झांसी जा रहे थे। अचानक ही बोले - मेरे पास पांच बेटे देने का अधिकार था। तीन मैं दे चुका हूं - एक हेमराज को, दूसरा नितेश को और तीसरा पंकज को। अब शेष दो किसे दूं! उस वक्त कोई भी नहीं बोला कि हमें दे दो।

सब चुप रह गए। पंकज जोशी की पत्नी श्रीमती तनूजा जोशी के शब्दों में - बड़ी बेटी के बाद हमें हुजूर की कृपा से पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। यह हज़रत की ही कृपा थी। प्रसव से पहले एक रात स्वप्न में किसी बुजुर्ग के दर्शन हुए। दूसरे दिन हुजूर से इसका जिक्र करने पर वे मुस्करा दिए और बोले कि मालिक के करम से पुत्र प्राप्त होगा। तेरा परिवार पूरा होगा। मैं अभिभूत हुई तथा उनके चरणों में नतमस्तक हो गई।

श्री पंकज बताते हैं कि एक बार तनूजा (उनकी पत्नी) को बहुत उल्टियां होने लगीं। पंकज उस वक्त चौथे शनिवार वाले ध्यान शिविर में बाबा हुजूर के स्थान पर राम जी के साथ थे। फोन आया तो बात हुजूर को बताई। वे बोले - तुम परोसकारी करो; पंगत में साधकों को भोजन कराओ। अब हज़रत की थाली लगाई गई। वे बाबा बादाम शाह की समाधि की तरफ देखने लगे। फिर बोले, हम भोजन नहीं करेंगे।.... अच्छा गाजर का हलवा खा लेंगे। थोड़ी देर बाद उन्होंने पंकज को उनके घर फोन करने के लिए कहा। उनकी मां ने बताया कि तनूजा सो रही है, यानी तबीयत ठीक है। सुबह तब राम जी ने भोजन नहीं करने वाली बात का खुलासा किया। बोले हमने हुजूर से कहा - बच्चा हमारे पास है और इसके घर में तकलीफ हो तो यह हमें मंजूर नहीं। तब बाबा हुजूर के आदेश से ही केवल गाजर का हलवा खाया। उधर तनूजा ने बताया कि रात भर हुजूर हाथ में माला लिए हुए मेरे सिरहाने बैठे रहे। तनूजा न केवल ठीक हो गई बल्कि उसे दोबारा ऐसी वोमिटिंग की तकलीफ नहीं हुई। गुरु कृपा का कोई आर पार नहीं है।

श्रीमती तनूजा के भाई अंशु पाण्डे की बात है। वह कहीं विदेश में नौकरी करता है। जब यहां आया तो गुरुदेव के आस्ताने में जियारत करने गया। जैसे ही समाधि पर

माथा टेका, उसके शरीर में मानों बिजली कौंध गई - सिर से ऊर्जा तरंग प्रवेश करते हुए पूरी देह में फैल गई। कुछ समझा नहीं। अचकचा गया। असमंजस में रहा। फिर रामदत्त जी के पास गया तो वे अंशु को देख कर मुस्करा दिए। अंशु लौट गया। अब उसे खुद के इधर-उधर राम जी ही नजर आने लगे। कम्पनी के ऑफिस में खुद की चेयर के पास वाली कुर्सी पर भी हज़रत बैठे हुए दिखते। ऐसा पांच दिन रहा - राम जी का रूहानी वजूद इतने वक्त साथ रहा। .....एक बार आगरा से दिल्ली जा रहे थे। ड्राइविंग ईशा (पत्नी) करने लगी। स्पीड अधिक थी। कार उलट गई - डिवाईडर को पार करती हुई चार पांच बार पलटी और खाई में उतर कर एक झाड़ी में अटक गई। कार तो टोटल डेमेज हो गई किंतु दोनों के खरोंच भी नहीं आई। .....वो पांच दिन की रूहानी नजर तब काम आई।

पंकज जोशी को आपने किसी दिन आश्वस्त कर दिया कि - जो कुछ तुम्हारा है उसे तो जाने नहीं दूंगा; और जो चला गया तो समझ लेना कि तुम्हारा नहीं था। इस युवक में गजब का अदब है, शालीनता है, मदद की वृत्ति है और नियमितता है।

(3). श्री प्रमोद अग्रवाल - आप हज़रत के मुरीद हैं। आपके घर वाले मंदिर में हज़रत की जो छवि विराजमान है उसमें अनूठा खिंचाव है। मुंह बोलती सी लगती है। आप पहले घसेटी मोहल्ला में रहते थे। मकान बहुत छोटा था और उसमें बरकत भी नहीं थी। हज़रत से इस संबंध में बात हुई तो वे बोले कि उस मकान को बेच दो। अब इतने छोटे मकान को बेचना और उचित कीमत मिलना; ये दोनों ही काम कठिन थे। किंतु गुरु कृपा से उस मकान की अच्छी कीमत मिल गई। तब रहने के लिए दूसरा मकान देखने लगे। हज़रत ने जिसे फाईनल किया वह मकान प्रमोद के पिता जी को

नहीं जमा। उन्होंने तीस चालीस अन्य मकान देखे। वे भी नजर से उतरते रहे। तब अंत में वही मकान खरीदा जिसे राम जी ने पहली नजर में ही फाईनल कर दिया था।

श्री प्रमोद एक्टिवा पर एक बार स्थानीय दौलत बाग से गुजर रहे थे। तभी एक बाईक अचानक ही बिल्कुल नजदीक से सामने कट मारती हुई निकल गई। आश्चर्य की बात यह है कि प्रमोद की गाड़ी का अगला पहिया तत्काल जैसे किसी शक्ति ने चालीस डिग्री तक दूसरी तरफ कर दिया परिणाम स्वरूप एक्सीडेंट टल गया। उस दिन गुरुवार था और प्रमोद आश्रम से ही लौटा था।

एक अन्य वाकया इस प्रकार है। श्री प्रमोद उस वक्त आईसीआईसीआई बैंक की के. सी. कॉम्प्लेक्स वाली शाखा में काम करते थे। गुरुवार का दिन था। वे आश्रम से लौटे थे। लिफ्ट से अपने ऑफिस जा रहे थे। थर्ड फ्लोर तक पहुंचते हुए बिजली चली गई। लिफ्ट ठहरी। तभी चमत्कार हुआ - स्वतः ही लिफ्ट नीचे उतर गई। गेट पर हाथ लगाते ही लिफ्ट का द्वार खुल गया। उन्होंने देखा कि वे ग्राउण्ड फ्लोर पर थे। जय हज़रत साहब!

(4). योगेश शर्मा - वह 31 दिसम्बर की रात थी। योगेश स्थान गया। वहां रामदत्त जी कुछ मुरीदों के साथ बैठे हुए थे। उसे देखते ही बोले, आज तो यहां बड़े बड़े कलन्दर आए हैं। फिर कहा कि पिताजी तो आश्रम में हैं; तुम यहां कैसे आए? योगेश ने कहा कि मेरे लिए तो आप में ही सब हैं। इतनी ही देर में राम जी की आंखों के भाव बदल गए - जैसे पिताजी महाराज का जलाल कौंधा, आवाज आई - बेटा! हम तुम्हारी परीक्षा ले रहे थे।

एक अन्य दिन की बात है। भैया हुजूर मौज में थे। गुरुदेव के आस्ताने में बैठे हुए थे। सात आठ साधक भी थे। आपने उन्हें कोई 'नाम' दिया। फिर गुरुदेव के नाम को मंत्र का रूप देते हुए आदेश किया कि उक्त मंत्र की एक माला रोज अवश्य पूरी करें। तभी उनका एक अन्य प्रिय साधक द्वार पर आया। उसे देखे बिना ही बोले - जो रह गया वह रह गया।

योगेश को किसी कथित पंडित ने कहा कि तुम्हारे दिन बहुत खराब चल रहे हैं। एक दो दिन बाद ही वह आश्रम गया। वहां रामदत्त जी सत्संग कक्ष में थे। योगेश को देखते ही अपने अन्य साधक को सम्बोधित करते हुए कहा - अलमारी में से मेरी डायरी लाना। डायरी के पन्ने पलटते जाते और बोलते जाते - यह ठीक है, ऐसा नहीं होने दूंगा। यह भी सही है लेकिन ऐसा तो हर्गिज नहीं होने दूंगा। फिर अंत में कहा, तुम मस्त रहो। यह सात साल पहले की बात है। योगेश आज राजी खुशी है।

किसी दिन महफिल के दौरान का वाकया है। राम जी में हाल चढ़ा। चेहरे पर अनुपम चमक बढ़ गई। आंखों में जलाल की बिजलियां सी कौंधने लगीं। सब के सब श्रद्धालु स्तब्ध रह गए। किसी ने उनमें गुरुदेव को देखा तो अन्य किसी को बाबा हुजूर का आभास हुआ। तब राम जी उठ कर हुजूर के आस्ताने में गए। माथा टेका और वापस गद्दी पर शोभित हुए।

योगेश की शादी में राम जी पधारे थे। विवाह के बाद पहली बार सपत्नीक उन्हें प्रणाम करने पहुंचे। उनकी पत्नी श्रीमती निशा बोली कि मैंने आपको शायद कल सपने में

देखा था। आपने कहा कि आज फिर तुम्हारे घर आएंगे। निशा प्रतीक्षा करती रही। फिर अचानक ही देखा कि वे कमरे में बिस्तर पर लेटे हुए हैं।

एक अन्य मौके पर निशा जी ने आस्ताने में हज़रत को सूखा मेवा खाते हुए देखा। उन्होंने निशा की तरफ मेवे का पात्र बढ़ाया। उसने उक्त पात्र में से प्रसाद ग्रहण किया।

(5). श्री नितेश गोयल - श्रीमती अमिता गोयल - यह दम्पती उन बड़ भागियों में हैं जिन्हें हज़रत ने अपनी रूहानी ताकत से पुत्र दिया। श्रीमती अमिता के अनुसार पति पत्नी दोनों स्वस्थ थे। फिर भी विवाह के 7-8 साल बाद तक घर में कोई किलकारी नहीं गूंजी। हुआ यह कि अमिता के फेरे वाले वस्त्र चोरी चले गए। जब ये हज़रत के पास आए तब उन्होंने भी इस बात की पुष्टि करी और कहा कि उनके निःसन्तान रह जाने की यही वजह है। आपने इन्हें जड़ी बूटी दी जो चालीस दिन तक लेनी थी। साथ ही कोई मंत्र भी दिया। फलस्वरूप इस परिवार को पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। आपके लिए रामदत्त जी सर्वोपरि हैं। आपने हज़रत के करम का एक अन्य दृष्टांत बताया - श्रीमती अमिता अपने चचेरे भाई के साथ कोचिंग सेंटर चलाती हैं। वह भवन किराये का था। आपने खरीदना चाहा। इसमें दो बाधाएं थीं - पहली यह कि वहां का कोई पहुंच वाला आदमी विरोध कर रहा था। राम जी ने उसे आश्रम में बुलाया। बात की। उसने अपनी सहमति दे दी। दूसरी बाधा धन की थी। अमिता ने प्रार्थना करी कि हमारा फ्लैट बिक जाए तो कोचिंग वाली बिल्डिंग खरीदी जा सकती है। हज़रत बोले कि फ्लैट नहीं बेचेंगे; कोई व्यवस्था हो जाएगी। उधर अमिता के पापा रिटायर हो गए। उनकी पेंशन की राशि जादुई तरीके से मात्र एक माह में मिल गई। उनकी मदद से

यह काम हो गया। इनके जीवन की प्रत्येक बाधा आज भी हज़रत के रूहानी करम से दूर हो जाती है।

एक दिन अमिता हज़रत के पास बैठी थी। उनके मन में कार खरीदने की बात चल रही थी किंतु बोली कुछ नहीं। सोच रही थी कि पुरानी कार मिल जाए तो भी उनका काम चल जाएगा। बस, थोड़े समय बाद ही इनके भाई श्री प्रमोद ने बताया कि एक पुरानी कार बिकाऊ है। आपसी मदद से नितेश जी ने उक्त कार खरीद ली। धीरे-धीरे वह पुरानी कार खराब हो गई। तब नई कार की कामना मन में उठी। दरबार में प्रार्थना करी। आश्चर्यजनक रूप से नई कार भी उपलब्ध हो गई। बेटा बीमार रहता था, वह गुरु कृपा से ठीक हो गया। अब नया फ्लैट भी खरीद लिया। ये दोनों कहते हैं कि हमारे तो सारे काम गुरु जी की कृपा से हो गए।

(6). **सी. ए. श्री सोमेश अग्रवाल** - आप भी अटूट आस्थावादी एवं समर्पित साधक हैं। किसी समय जयपुर की एक कम्पनी में सी. ए. थे। मल्टी फ्लैट वाली बिल्डिंग में रहते थे। हज़रत के साथ रामपुर गये हुए थे। पीछे से बिल्डिंग में आग लग गई। उस भवन को टच करते हुए हाई टेंशन वाली बिजली की लाईन निकल रही थी। उसी के कारण फ्लैट के वायरों में आग लग गई। इनके हिस्से को छोड़ कर सारे घरों में विद्युत उपकरण जल गये। इनके ऊपर वाले फ्लैट में तो टीवी पिघल कर बह गया था। गुरु कृपा से इनका घर सर्वथा सुरक्षित रह गया। घर से इन्हें फोन पर सारी बात बताई गई। आपने हज़रत को कहा लेकिन वे सामान्य बने रहे। कुछ नहीं जताया।

जयपुर वाली कम्पनी ने बम्बई भेज दिया। पे भी ज्यादा कर दी। किंतु वहां का काम इन्हें नहीं जंचा। सुनीता (पत्नी) को हज़रत के पास भेजा। आपने कहा - नौकरी छोड़ दो। सोमेश जी ने आज्ञा का पालन किया। तीन माह बाद ही वहां छापा पड़ा। कई लोग पकड़े गए। हुजूर ने आपको इस तरह बचा लिया।

(7). ओंकार जी - इनकी पुत्री प्रीति का विवाह होना था। कार्ड बांटे जा रहे थे। तभी उसकी बड़ी बहिन भगवती देवी बीमार पड़ गई। अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। वेंटीलेटर पर पहुंच गईं। डॉक्टर ने कहा कि उम्मीद न के बराबर है। तब ओंकार जी बाबा हुजूर की दरगाह गये। सुबक सुबक कर रोने लगे। तभी हज़रत की आवाज सुनाई दी- रोओ मत! हम बैठे हैं ना! जाओ, सब ठीक होगा। वह खुद चल कर घर आएगी। ऐसा ही हुआ। शादी वाले दिन ही भगवती देवी घर पहुंच गईं।

अहमदाबाद में इनकी रिश्तेदार दो महिलाएं रहती हैं। बात उस समय की है जब उनमें से एक तो निःसंतान थी और दूसरी के तीन लड़कियां थीं। जो स्त्री प्रेग्नेंट थी उसकी सोनोग्राफी में चौथी भी लड़की थी। ओंकार जी हज़रत की शरण में गए। प्रार्थना की। रामदत्त जी बोले - चिंता मत कर। मैं उसे लड़की के साथ लड़का भी दूंगा। अब ओंकार जी ने वापस निवेदन किया कि हुजूर! लड़की तो निःसंतान महिला को दे दो और दूसरी को बेटा बख्श दो। हज़रत ने कहा, ठीक है। ऐसा ही हुआ।

ओंकार जी आज भी हज़रत के रूहानी सम्पर्क में हैं। दर्शन होते रहते हैं। लोगों के कार्य भी सम्पन्न कराते रहते हैं। उन पर मालिक की असीम कृपा है।

(8). श्री राजेश गुप्ता, राजसमंद - इनकी एंजियोप्लास्टी हुई थी। चिंतित रहते थे। आपके पास आए। बोले कुछ नहीं। हज़रत ने सब देख लिया। राजेश जी के सिर पर हाथ रखा। इस कृपा के परिणाम स्वरूप उन्हें पोस्ट ऑपरेटिव तकलीफ नहीं हुई।

सन 2012 की बात है। राजेश जी को उदयपुर में किसी के साथ बिजनेस करने का प्रस्ताव मिला। आप बहुत उत्साहित थे। किंतु हज़रत की अनुमति के बिना आगे बढ़ना नहीं चाहते थे। इनकी शरण में आए। सारी बात बताई। आपने दो दिन बाद फोन करने के लिए कहा। जब फोन किया तो साफ मना कर दिया कि उक्त काम मत करना। कालांतर में उस पार्टी की वह योजना ही फेल हो गई।

जब आप पहली बार हज़रत की शरण में आए तब आर्थिक अवस्था सामान्य थी। बाद में इनकी कृपा से धन-धान्य बढ़ता ही रहा। आज दो-दो मकान हैं। कोई भी तकलीफ आज उनके स्मरण मात्र से ठीक हो जाती है।

(9). **श्री नंद किशोर जसनानी - 'अब घर के दरवाजे नहीं बजेंगे'** - सन 2009 से 'कुछ परा शक्तियों' की वजह से इनका जीवन अव्यवस्थित था' इसलिए गुरुदेव ने इन्हें घर के लिए 'लोबान' दिया था जिससे सुबह-शाम घर को वासित करना था। ये नियम 40 दिन चला और इसके दौरान ही एक अजीब सी घटना घर में घटने लगी। 'कोई' रात को इनके (माता-पिता, बड़े भाई साहब और परिवार) कमरों के दरवाजे पर 'दस्तक' देता था। बहुत जोर जोर से 'कोई' खटखटाता था। ये हड़बड़ा कर जागते और तुरंत दरवाजा खोलते तो आवाज बंद हो जाती और वहाँ कोई नहीं होता। शुरू में ऐसा किसी एक कमरे के दरवाजे पर होता लेकिन धीरे धीरे तीनों के कमरे के दरवाजे

एक साथ बजने लगे। खोलने पर कोई नहीं होता और पीछे रह जाता - अनजाना डर और चिंता। इस दौरान गुरुदेव के बताए उपाय भी कर रहे थे जिनमें उनकी दी हुई 'तीन बत्तियों' वाला 'नजर निवारक' उपाय भी शामिल था। जिस दिन वो उपाय किया तथा जैसे ही बत्तियाँ जल कर समाप्त हुईं एकाएक घर के फ्रीजर में रखी शर्बत की बोतल जोर के धमाके के साथ फट गयी। इन्हें कुछ समझ में नहीं आया। इसे बला टलने का संकेत समझ कर बात को भुला दिया और गुरुदेव के दिशा निर्देश पर चलने लगे। इसके कुछ दिन बाद ही एक रात करीब 2 बजे नंद जी के कमरे की अलमारी को कोई जोर जोर से पीटने लगा। वे और उनकी पत्नी हड़बड़ा कर उठे तो देखा कि सामने अलमारी बज रही है पर कोई दिखाई नहीं दे रहा था। इससे पहले कि वे कुछ समझ पाते 'कोई आवाज' इनकी पत्नी के कानों में चीखती हुई चली गई 'मैं हूँ.....मैं हूँ.....' और तुरंत ही दरवाजे बजने लगे। ये सब बाहर आए तब भी दरवाजे बजते रहे। कोई दिख नहीं रहा था पर दरवाजे बज रहे थे जो थोड़ी देर बाद शांत हुए। डर और खौफ में जैसे-तैसे रात निकाली और अगले दिन सुबह गुरुदेव के पास पहुँच गए।

नन्द जी के अनुसार 'उनके सामने बैठने पर जो पहला एहसास होता था वो था - अदृश्य आश्वासन, दुलार और सांत्वना! मानो वो अपनी आँखों से कह रहे हों कि यहाँ आ गए हो अब चिंता कि कोई बात नहीं'। सारी बात सुन कर आप बोले कि 'अब आपके घर पर दरवाजा नहीं बजेगा'। ऐसा ही हुआ। उस दिन के बाद सब कुछ सामान्य हो गया और फिर घर के दरवाजे कभी नहीं बजे।

(10). श्री प्रभुदत्त मिश्रा - आप हज़रत के छोटे भाई हैं। आपने हज़रत रामदत्त जी के विषय में लेख भेजा है। उसे हम यहां यथावत प्रस्तुत कर रहे हैं -

प्रभुदत्त! तुम मुझे कैसे पुकारते हो।
मैं तो आपको "**भैया**" के नाम से ही पुकारता हूं, आप मेरे बड़े भाई हैं। कुछ देर खामोश रहने के बाद, ''अच्छा ! आज से तुम मुझे "**भैया हुजूर**" कह कर पुकारा करो।''
मैनें कहा ''**जी भैया हुजूर**''
इस प्रकार आपने मुझे अपने को पुकारने का संबोधन प्रदान कर कृतार्थ किया। भैया हुजूर, हज़रत रामदत्त मिश्रा कलंदर 'उवैसी' र.ह. मेरे बड़े भाई थे और हैं। आज भी उनके पास उनके आस्ताने में जाकर बैठता हूं तो उनका लाड़, प्यार मुझे वैसा ही महसूस होता है जैसे वो अपनी हयात में मुझे किया करते थे। पिताजी (मेरे गुरूदेव भी) के पर्दा करने के पहले और बाद में भी उन्होंने मुझसे पुत्रवत स्नेह किया। मेरी फिक्र करना और शुक्रवार के दिन मैं सपरिवार यानि पत्नी और पुत्र सहित उनके पास आश्रम पर जाया करता था। हमारा यह रूटीन पहले पिताजी के वक्त में भैया हुजूर के साथ भी चल रहा था, और जब पिताजी ने पर्दा कर लिया और भैया हुजूर स्वयं आश्रम पर रहने लगे तो मेरा यह रूटीन तब भी यथावत चलता रहा जो आज भी निरंतर जारी है। जब वे आश्रम पर रहने लगे तो जब तक मैं सपरिवार सकुशल उनके पास पहुंच नहीं जाता था तब तक वो इंतजार करते रहते थे और फिक्रमंद रहते थे। एक बार मैं ऑफिस से आने में कुछ लेट हो गया और कार से सपरिवार आश्रम आ रहा था, वक्त था कोई 8.00 बजे सांय का। मैं कार तेज चला रहा था तभी दौराई स्टेशन के पास पुलिया के नजदीक सामने से ट्रक आ गया। मैं उसकी तेज हैडलाईट

के चौंध की वजह से कुछ असंयमित हो गया, परन्तु शीघ्र ही संभल गया। खैर, मैं आश्रम पहुंचा तो भैया हुजूर ने डांटा कि गाड़ी ढंग से चलाया करो। वहां उस वक्त पंकज जोशी भैया हुजूर के पास मौजूद थे। बाद में उन्होंने बताया कि ''हुजूर ध्यान में बैठे थे कि अचानक से बोले संभल के प्रभुदत्त''। तब मुझे पता चला कि उनकी नजर मेरे साथ चल रही थी। वे किस प्रकार से फिक्रमंद थे। इसी प्रकार वो अपने हर एक शिष्य का भी ध्यान रखा करते थे।

बाबा हुजूर की भविष्यवाणी - उनको जानने वाले सभी जानते हैं कि भैया हुजूर एक बहुत ही सीधे-सादे व्यक्तित्व वाले इंसान थे। जब उनका जन्म हुआ तब बाबा हुजूर ने चाचाजी को पहले ही कह दिया था कि ''बेटा, इस लड़के का सिर बड़ा है व माथा चौड़ा है। यह नेताजी के नक्षे-कदम पर चलेगा और खूब गायेगा, बजायेगा।'' इस प्रकार से बाबा हुजूर ने भैया हुजूर के भविष्य की बात पूर्व में ही कह दी थी। अतः भैया हुजूर का रूहानी भविष्य तो पूर्व-निर्धारित था।

उनका जीवनकाल और मेरे कुछ अनुभव - समय गुजरता गया और आपकी शिक्षा-दीक्षा भी चलती रही। जब समझदार हुए तो बाबा हुजूर के आस्ताने पर उनके गुसल के लिये जाने लगे और हर बुधवार सांय साईकिलों पर सवार होकर कुछ एक भाईयों के साथ बाबा हुजूर के आस्ताने पर जाते और दूसरे दिन प्रातः उनकी समाधि को गुसल करवाने के बाद वापस आते। वहां पर रात का वक्त साधना में बीतता था और यदाकदा बाबा हुजूर से कुछ निर्देश भी मिल जाते थे। यह नियम आपका आखिरी वक्त तक यथावत चलता रहा। बाबा हुजूर आपको ''भीमसेन'' के नाम से बुलाते थे।

इस प्रकार आपको पिताजी यानि गुरूदेव से और बाबा हुजूर से रूहानी मार्गदर्शन मिलता रहा और आपको पैगंबर हज़रत मोहम्मद स.अ.व. एवं सिलसिलाए उवैसिया के बुजुर्गों के दर्शन भी हुए।

चूंकि घर में गाने बजाने का वातावरण पिताजी के वक्त से ही था। बहनों ने भी संगीत सीखा और भैया हुजूर ने भी तबला बजाना सीखा। घर पर पिताजी का जब भी मूड होता वे हारमोनियम लेकर बैठ जाते और कव्वाली या भजन आदि गाते थे और भैया हुजूर तबले पर उनकी संगत किया करते थे। मैं उस वक्त छोटा था परन्तु अंदर ही अंदर मन करता था कि मैं भी तबला और बाजा बजाना सीखूं। अतः बहनें जब हारमोनियम बजाया करती थीं तो मैं उनको देख-देख कर हारमोनियम बजाना सीख गया और भैया के पास उनके कुछ शिष्य तबला सीखने आते थे तो उनको देखकर मैनें तबला भी थोड़ा-थोड़ा बजाना सीख लिया। बाद में जब पिताजी को ये पता चला कि मैं हारमोनियम बजाने लगा हूं तो उन्होंने बैठा कर मेरी परीक्षा ली यानि कि स्वयं ने क्लासिकल गाया और आलाप आदि लीं और मैंने उनको हारमोनियम पर अनुसरण किया। जब वे संतुष्ट हो गये तो उन्होंने मुझे शाबासी दी। तब से मैं उनके साथ, जब भी वो गाते तो, बाजा बजाने लगा।

बाद में भैया हुजूर और मैनें आपस में तय किया कि बृहस्पतिवार को जो गुरू-वंदना घर में गाई जाती है, हम बाजे-तबले के साथ गाएंगे। इस बाबत भैया हुजूर ने पिताजी से इजाजत मांगी जो कि मिल गई और हम दोनों भाईयों ने घर में बाजे-तबले से गुरू-वंदना गानी शुरू की।

इस प्रकार भैया हुजूर और मेरा लगाव बड़े-छोटे के रिश्ते के अतिरिक्त संगीत के माध्यम से और भी अधिक होने लग गया। फिर मैं उनके साथ और भी कई घरेलू कामों में हाथ बंटाने लगा।

उनके विवाह के पश्चात वे जब भी अपनी ससुराल झांसी जाते तो अधिकतर मैं ही उनके साथ जाता था। उनके ससुराल में हम दोनों को उनकी सलहज आदि राम-लक्ष्मण कहा करतीं थीं। वहां भी जब हम दादा हुजूर की दरगाह तक ऑटो या तांगे आदि से जाते तो वो रास्ते में कई बातें समझाते जाते थे। इस प्रकार उनका मार्गदर्शन भी मुझे यदा-कदा मिलता रहता था।

जब रामगंज में पिताजी ने उनकी दुकान खुलवाई तो बाद में कई बार वो दुकान पर बैठे-बैठे भी लोगों के इलाज आदि कर देते थे। कब ध्यान में जाते और कैसे, किस प्रकार किसी जरूरतमंद की मदद कर देते थे। ये बाद में ही पता चल पाता था।

हुजूरों के भंडारों में जब कभी उनके साथ कुछ गुजरान गुजरता था तो वो भी मेरे साथ शेयर करते थे और फिर उसका मर्म भी समझा देते थे। उनकी बड़ी कृपा थी। उन्होंने सभी से बहुत ही प्यार किया।

पिताजी (पूज्य गुरूदेव) के पर्दा करने के बाद उनका व्यक्तित्व एक अलग ही रूप में निखर कर सभी के समक्ष आया। वे सभी को अपने अंक में समेटने की भरपूर कोशिश करते थे। समय-समय पर विभिन्न आयोजन कर आश्रम पर आने वालों के मन

में आल्हाद और उत्साह भर दिया करते थे। वे एक विराट व्यक्तित्व के धनी थे जो आश्रम और आने वालों पर पूरी तरह से छाया हुआ था जिसका प्रभाव आज भी दिखाई देता है।

रूहानियत क्या होती है, यह तो मैं आज भी नहीं समझता हूं क्योंकि रूहानियत बहुत ही अलग और गहरा विषय है परन्तु मेरे पिता, मेरे गुरूदेव की एवं भैया हुजूर की कृपा से जो कुछ भी थोड़ा बहुत समझने की कोशिश करता हूं या समझ पाता हूं वो उनकी रहमत ही है।

भैया हुजूर और मेरे उनके साथ के अनुभव और अधिक क्या कहूं। असमर्थ महसूस करता हूं। उनकी कृपा सभी पर बनी रहे।

(11). श्रीमती मीना चौहान - बात उस समय की है जब आप स्कूली विद्यार्थी मीना थीं। जावरा में घर था। वहीं स्कूल में पढ़ती थीं। उम्र यही कोई दस साल। एक दिन पढ़ाई में मन नहीं लग रहा था। कक्षा से बाहर जंगल दिखने लगा। नजारा खूबसूरत था। जंगल के बीच में मनमोहक पगडण्डी थी। वह बच्ची उसी सुंदरता में खो गई। फिर तो अनेक बार ऐसा हुआ। समझ में कुछ नहीं आया किंतु सब कुछ अच्छा लगता था। फिर 1980 में अजमेर के एक चौहान परिवार में विवाह हो गया। तब होलीदड़ा में रहती थीं। पति श्री के. डी. चौहान बैंक में कार्यरत थे। नाका मदार की बैंक कॉलोनी में मकान बना लिया। वहीं डा. राजीव भी मकान बनवा कर रहने लगे। डा. राजीव व उनकी पत्नी रंजना शर्मा प्रति गुरुवार बाबा बादाम शाह की दरगाह (सोमलपुर) जाते थे। श्रीमती मीना भी एक दिन उनके साथ गईं। वहां बीच राह में

जंगल जैसा सुंदर दृश्य देखते ही उन्हें बचपन में दृश्यमान जंगल की याद आई। अब वे उसी अतीत में डूबने लगीं। समझ में आया कि बाबा हुजूर उन्हें उस समय से अपनी तरफ खींच रहे थे। हुजूर की कृपा के अनुभव से दिल भर गया। आंखें नम हो गईं। सारी बात श्रीमती रंजना से शेयर की। स्थान पर पहुंच कर स्वयं को निहाल समझने लगीं। ऐसे मुरीदों के साथ महात्मा का जरूर कोई पूर्व जन्म का नाता होता है तथा इस तरह उजागर होता है।

यह वाकया उस समय का है जब हज़रत रामदत्त जी के साथ झांसी जाना हुआ। साथ में अनेक मुरीद थे। श्रीमती मीना का साहचर्य डा. राजीव एवं श्रीमती रंजना के साथ था। रंजना तो ग्वालियर में किसी रिश्तेदार के घर ठहर गईं। झांसी पहुंच कर गुरुजी के साथ दरगाह में फूल, माला पेश की। फिर उन्हीं के आदेशानुसार ध्यान में बैठ गए। गुरु कृपा से ध्यान में आनंद बढ़ गया। कितनी देर हुई, ज्ञात नहीं; जैसे समय ठहर गया। ध्यान तब टूटा जब हज़रत की आवाज सुनी- उठो, अब भोजन कर लो। श्रीमती मीना उस अनुभूति को अविस्मरणीय बताती हैं।

(12). श्री के. डी. चौहान - आप श्रीमती मीना चौहान के पति हैं। बैंक में काम करते थे। नियति की प्रतिकूलता से नौकरी में बाधा आई। आप मानसिक स्तर पर बहुत परेशान हो गए। तब हज़रत की शरण में पहुंचे। उन्होंने कहा, बाबा हुजूर का ध्यान किया करो। वे सब ठीक कर देंगे। एक दिन आश्रम में ध्यान कर रहे थे। उधर रामदत्त जी भी ध्यानस्थ थे। ध्यानावस्था में ही उन्होंने कहा - चौहान जी! समय आने पर आपकी ही विजय होगी। इस तरह छह साल बीत गए। फिर चार मार्च 2012 के दिन हज़रत के आदेशानुसार वे संबंधित आई. ए. एस. अधिकारी पी. एस. मेहरा से मिलने

जयपुर गए। साथ में श्रीमती मीना थीं जो गुरु जी की छवि को गोद में रखे हुए लगातार उनके ध्यान में मग्न थीं। अधिकारी ने उनकी बात सुनी। उस समय ऐसा लग रहा था मानो राम भैया ही वहां बैठे हुए हैं। बात बन गई। मेहरा जी ने बैंक के प्रबंध निदेशक को फोन पर आदेशित किया कि श्री चौहान को ड्यूटी पर लो और मुझे सूचित करो। ऐसी होती है परम कृपा।

(13). श्रीमती रंजना शर्मा - आप हज़रत हरप्रसाद मिश्रा साहब की मुरीद हैं। राम जी ने भी साधना के पथ पर आपको और आगे बढ़ाया था। एक बार रंजना जी ने हज़रत को कहा कि आप में पिताजी की बू (खुशबू) आती है। उनका भाव बहुत ऊंचा था - जिस तरह 'बू अली कलंदर' में हज़रत अली की बू आती थी वैसे ही राम जी में उन्हें अपने दीक्षा गुरु वाली बू की अनुभूति होती थी। आपके अनुसार राम जी जब कोई कलाम पेश करते थे तो उन्हें रूहानी चढ़ाई का अनुभव होता था। हज़रत की खूबी थी कि वे बीच-बीच में कव्वाली के गहरे भाव को भी समझाते थे। भजन एवं कव्वाली; दोनों की गायकी पर उनका समान अधिकार था। आप मेरे गुरु भाई, वक्त के दरवेश एवं रूहानी रहबर; सब कुछ रहे हैं।

(14). डॉ. शशिकला चौधरी - इनकी बात उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत है - एक स्वरूप में अनेक रूप। मैं जब भी भैया शब्द उच्चारती हूं तो मानस में राम भैया का साक्षात्कार होता है। हमारे सद्गुरु हरप्रसाद मिश्रा साहब ने सबसे पहले हमारा परिचय राम भैया से कराया। वे उन्हें 'रामू जी' सम्बोधित करते हुए बोले - ये मेरे सारे कार्य भी सम्हालते हैं एवं अपनी दुकान भी। इन्हें तंत्र मंत्र का भी सम्पूर्ण ज्ञान है। ये ऊंचे दर्जे के साधक भी हैं। पिताजी को अपने रामू जी के पुत्र और शिष्य, दोनों रूप पर

बहुत गर्व था। वे अक्सर राम भैया की दिल की गहराई से प्रशंसा करते थे। वे भवरोग के भी वैद्य थे।

राम भैया और सुधा भाभी को मैं सदैव दिव्य जोड़े 'शिव पार्वती' के रूप में देखती थी। शिवरात्रि के पर्व पर तो उन्हें देख कर मन प्रफुल्लित रहता था। प्रभु भैया उन्हें 'भैया जी' कहते थे। राम भैया की उपस्थिति में ये निश्चिंत एवं मस्त रहते थे। प्रभु जी पर उनके इन भैया की रूहानी और दुनियावी, दोनों तरह की छत्र छाया रही है। उनके शिष्य ही उनकी सन्तान हैं। उन्होंने सबको अपने दिव्य प्रेम से नवाजा और सब पर अपनी नजरें हर वक्त बनाए रखीं। उन्होंने मुझे अपनी बहिन माना। उनके अपार प्रेम एवं स्नेह और बड़े भाई वाले रक्षा कवच का मुझे प्रतिपल अनुभव होता रहा है। मुझ पर आपने दिव्य ऊर्जा भी बरसाई तथा महसूस भी कराई।

अंत में मैं तो यह कहूंगी -

आनन्द के तुम स्रोत - सुधीर, सत्य सार अपार हो;
आकार हो, आधार हो! प्रपंच के विस्तार हो!
शुद्ध प्रेम पाते वही जो जपते सदा तव नाम हो;
श्री गुरु कृपा कर हे दया कर, दीनबंधु देव दया कर!
हे कृपा कर, हे दया कर,
श्री गुरुदेव का स्वरूप शाश्वत,
हे कृपा कर, हे दया कर!

(15). श्री सर्वेश प्रजापति - 'हज़रत बोले कि बाबा साहब ने तुम्हें उम्र बख्श दी है'

यह गजब का प्रसंग है। वैसे सर्वेश भी हज़रत के अत्यधिक चहेते शिष्यों में रहे हैं। एक बार इनकी पत्नी श्रीमती नम्रता ने सपने में सर्वेश का एक्सीडेण्ट देखा। उस दुर्घटना में अशुभ घटित हो गया था। सुबह उन्होंने हज़रत को फोन पर सारी बात बताई। वे बोले कि चिंता मत कर; शाम को वह स्थान आएगा तब सब ठीक हो जाएगा।

बुधवार का दिन था। सर्वेश को कुछ पता नहीं। वे संध्या समय स्थान गए। हज़रत के पास बैठ गए। उन्होंने कोई भूमिका बताए बिना ही सर्वेश को कहा - बाबा हुजूर ने तुम्हें उम्र बख्श दी है। घटनाक्रम सारा होगा किंतु तेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा। सर्वेश ने इसे लम्बी उम्र का संकेत समझा और प्रसन्न हो गए। दूसरे दिन वे सपरिवार कार में बैठ कर बाजार गए। वहां गाड़ी भिड़ गई। लोहे का खम्भा गाड़ी में घुस गया। गाड़ी बुरी तरह टूट गई। लेकिन उनमें से किसी के कोई खरोंच तक नहीं आई। इसके बाद उन्हें सारे प्रकरण का पता चला।

सर्वेश के लिए हज़रत साक्षात भगवान हैं। उनका कथन है कि वे हर पल मेरे साथ हैं। सारे काम उन्हीं की कृपा से ठीक होते रहते हैं।

(16). विनोद दाधीच - ये पहली बार आश्रम गए तब की बात है। बाबा हुजूर के दरबार से निकले। रात के आठ बज चुके थे। बाहर तूफान के कारण बिजली गुल थी। घोर अंधेरा। दूर-दूर तक कोई मनुष्य नजर नहीं आ रहा था। किंतु इनके भीतर डर

नहीं था। बाबा के प्रति अटूट विश्वास था। खैर, हुआ यह कि ये रास्ता भटक गए। गुरुदेव को याद किया। तभी एक सज्जन वहां आए। उन्होंने रास्ता बताया। इनका दिल कह रहा था कि ये ही बाबा हुजूर हैं। किंतु कुछ बोल नहीं सके।

मालिक की कृपा से आश्रम पहुंच गए। वहां पहुंचते ही कमाल हो गया - तूफान थम गया। बिजली भी रोशन हो गई। गुरुदेव के चरण स्पर्श किए। बड़ा सुकून मिला। रोमांच हुआ। ये तो जैसे निहाल हो गए। तब आप बोले - तुम घर पर कह कर नहीं आए हो। इसलिए यहां महफिल में मत ठहरना। घर लौट जाओ। बारिश आने वाली है। और जैसे ही विनोद जी आश्रम से बाहर निकले, बरसात आरम्भ हो गई। किंतु ये घर सकुशल पहुंच गए। आप फरमाते हैं कि उनका वो परम स्वरूप मुझे आज भी यथावत याद है।

आपका कहना है कि गुरु की नजर तो पत्थर को भी हीरा बना देती है। आपने कहा - किसी के हाथ में हीरा, किसी की अंगूठी में हीरा और किसी अन्य की तिजोरी में हीरा। लेकिन मेरे लिए तो सद्गुरु ही हीरा हैं। उनके सामने सारी दौलत निर्मूल्य है। मुझे जब गुरु जी के चरण स्पर्श का सौभाग्य मिला तब मुझे यही अनुभूति हुई थी। ऐसे गुरुदेव पा कर मैं धन्य हो गया। अवश्य ही यह मेरे बुजुर्गों की कृपा का फल है। वे बोले कि मेरे जैसे अधम के घर आकर भी मुस्करा जाना उनके जैसे महात्मा का ही करम है। मैं उनके बारे में क्या लिखूं! मैं सूरज को दीपक नहीं दिखा सकता हूं।

आपके विचार हैं - सांसारिक दौलत तो जैसे तैसे मिल ही जाती है किंतु ऐसे गुरु और उनका दरबार नहीं मिलता; नसीब से ही मिलता है। उस दरबार की खासियत यह है कि न तो अंदर कोई पुजारी और न ही बाहर किसी को बिठाया है। जो कोई भी दास भाव से उनके पास जाता है, वे उसी के साथ चल देते हैं। इसीलिए कहा गया है कि संत या सत् का साथ मत छोड़ो। संत की कृपा से भौतिक एवं आध्यात्मिक, दोनों समृद्धि प्राप्त होती है।

(17). कन्हैया जी - आपकी हज़रत में अटूट श्रद्धा रही है। एक बार अपने प्लॉट में बबूल के पेड़ पर चढ़े हुए थे। कोई डाली काटनी थी। जमीन से लगभग तेरह फीट ऊपर थे। अचानक ही नीचे गिर गए। हाहाकार मच गया। कोई बोला हड्डी टूट गई, किसी ने कहा कि बॉल टूट गई। तुरंत अस्पताल ले गए। आप हज़रत को याद करते रहे। डॉक्टर हैरान रह गया - इनके शरीर में कोई चोट नहीं थी। उसे यकीन नहीं हुआ कि 'यह आदमी' तेरह फीट की ऊंचाई से गिरा है। फानूस बन कर जिसकी हिफाज़त हवा करे। वो शमा क्या बुझे जिसको रोशन खुदा करे।

किसी दिन उसी प्लॉट में नाली खोद रहे थे। तभी मन अन्य कार्य की तरफ भटक गया। नाली खोदना छोड़ कर वे दूसरा काम करने लगे। थोड़ी देर बाद वापस लौटे तो देखा कि नाली की जगह सांप बैठा था। तत्काल ही सारी बात समझ गए और हज़रत को मन ही मन प्रणाम किया - आपने आज मुझे बचा लिया हुजूर।

ऐसे ही कभी अपने भाई को जयपुर छोड़ने गए। खुद की कार थी। लौटते वक्त की बात है। कार 60 - 70 की स्पीड पर दौड़ रही थी। तब ही इन्हें झपकी आ गई फिर

जैसे किसी ने थपकी मारी। ये सचेत हुए तो चौंक गए और घबरा भी गए। कार लगभग चार कि.मी. उसी निंद्रावस्था में आगे बढ़ गई। वह भी इनके हज़रत का ही करम था कि इनकी गाड़ी खुद ने कंट्रोल की और इन्हें जगाया।

बात उस वक्त की है जब वे अपनी बहिन अल्का को गुवाहाटी से अजमेर लाए। घर पहुंच कर अल्का ने अपने जेवर का बॉक्स सम्भाला तो स्तब्ध रह गई। सामान में स्वर्णाभूषण नहीं थे। वह रो दीं। कन्हैया जी उसे हज़रत के पास ले गए। वे अपनी अंगुलियों से सोने की अंगूठियां उतारते हुए बोले - रो मत; मेरी इन अंगूठियों से अपने गहनें बनवा लेना। कन्हैया जी ने रोते हुए उन्हें रोका कि मालिक ऐसा मत करिए। राम जी ने तब ध्यान लगाया और कहा - गहनें घर में ही हैं। बाद में ज्ञात हुआ कि अल्का की सास ने सुरक्षा के तौर पर गहनों का बॉक्स घर पर ही रख लिया था। कन्हैया जी कहते हैं कि हज़रत मेरे लिए आज भी साक्षात ईश्वर हैं।

एक दिन आप अपने किसी परिचित को हज़रत के पास ले गए। वह किसी प्रेत बाधा से पीड़ित था। दोनों रामदत्त जी के पास बैठे थे। तभी उनके साथ वाला आदमी बोला कि मुझे यहां क्यों लाए हो। मामूली चुप्पी के बाद हज़रत ने कन्हैया जी को कहा कि तुम आज रात को अपने घर से बाहर मत निकलना। दूसरे दिन सुबह कन्हैया भाई ने देखा कि उनके घर के बाहर वाला पेड़ जल गया है। मतलब यह कि उस आदमी के भीतर वाली बला ने उन पर इतना तगड़ा प्रहार किया था। तत्पश्चात राम जी ने एक ही बार में उस आदमी को प्रेत बाधा से मुक्त कर दिया।

(18). श्री रवि माथुर - आपका परिवार तो बाबा हुजूर से जुड़ा हुआ था। आपके दादा जी एवं पिताजी पर अजमेर के उवैसिया दरबार की कृपा रही है। आपने अपने जीवन का एक वाकया सुनाया - कोई वक्त था जब रवि जी दिल्ली में नौकरी करते थे। एक टेस्टिंग कम्पनी में थे। किसी समय गुरुदेव हज़रत हरप्रसाद जी से बात हुई। गुरु जी ने अजमेर में अपना ही काम आरम्भ करने के लिए कह दिया। अब गुरु का आदेश तो मानना ही था। आपको मिट्टी, पत्थर, पानी आदि की टेस्टिंग का ज्ञान था। गुरुदेव ने नाम सुझाया - गुरु कृपा टेस्टिंग हाऊस । अब कम्पनी के उद्घाटन की बात आई। यहां सोमलपुर में (सन 1996) झांसी वाले दादा साहब हज़रत निजामुल हक कलन्दर के भण्डारे के दूसरे दिन उद्घाटन समारोह तय हुआ। गुरुदेव ने इस कार्य के लिए रामदत्त जी को मुकर्रर किया। दूसरे दिन ही उन्हें पीलिया हो गया तथा तेज बुखार भी था। फिर भी हज़रत श्री माथुर के घर गए। भोग तैयार कराया। फातिहा लगाते वक्त उवैसिया सिलसिले के अन्य बुजुर्ग भी रूहानी तौर पर मौजूद थे। ऐसा हज़रत ने बताया और कहा कि तुम्हारा काम फलीभूत होगा। सब के सब अभिभूत, प्रसन्न, कृतज्ञ। परिवेश में रूहानी अनुभूति। फिर भोजन प्रसादी के बाद राम जी का बुखार उतर गया और पीलिया भी नहीं रहा। इस कम्पनी को पहला काम मिला - हुजूर वाली दरगाह के हैण्ड पम्प के पानी की टेस्टिंग। पानी बिल्कुल बढ़िया निकला।

(19). श्री संजय गर्ग (मम्मू) - आप हमारे आश्रम के कर्मठ सेवादार हैं। भण्डारे व प्रसादी में भोजन की व्यवस्था आप ही श्री अनूप गुप्ता के साथ मिल कर करते हैं। भोजन बनवाना और आगंतुकों को परोसने का प्रबंध इनकी जिम्मेदारी है। ये दोनों हज़रत के चहेते रहे हैं। इन्होंने एक प्रसंग बताया - ये सब झांसी गए थे। वहां श्री अनूप गुप्ता और मम्मू पिताजी (गुरुदेव) से बात कर रहे थे। रामदत्त जी दालान में बैठे

हुए थे। बात पूरी होने के बाद दोनों राम जी के पास गए। उन्होंने वो सारी बात बता दी जो इन्हें पिताजी ने कही थी। फिर वे बोले कि हमसे कुछ भी छिपा हुआ नहीं।

(20). श्री योगेश बंसल - ये सज्जन हज़रत हरप्रसाद मिश्रा उवैसी के मुरीद हैं। उनके कृपा पात्र भी। आपने घर पर एक संचय पात्र रखा हुआ था। अपनी आय का एक अंश उसमें गुरु नाम से संचित करते रहते थे। पैसे संबंधी दिक्कतें आती-जाती रहती थीं लेकिन उस पात्र में से कुछ नहीं लेते थे। एक दिन आश्रम में गुरुदेव ने ही कहा कि संकट से उबरने के लिए उस पात्र में से राशि ले लिया करो। योगी जी ने रकम निकाली और उसकी पर्ची लिख कर वहां रख दी। फिर पैसे डालते-निकालते रहे। गुरु की नजर तो थी ही। आगे चल कर गुरु जी ने पर्दा कर लिया। हज़रत राम जी गद्दी नशीन हुए। योगी भाई का काम वैसे ही चलता रहा। उल्लेखनीय यह है कि उस पर्ची पर लिखी हुई रकम कभी भी पूरी नहीं हो सकी; और वे उक्त पर्ची को उस संचय पात्र से नहीं निकाल सके। एक दिन रामदत्त जी इनके घर पहुंचे। वे बड़ी मौज में थे। अचानक ही बोले - योगी, वह डब्बा लाओ। ये समझे नहीं। वे पुनः बोले कि हमारा वह डब्बा लाओ जिसमें पैसे रखते हो। आपने आज्ञा का पालन किया। डब्बा उनके पास रख दिया। उन्होंने कहा - इसे हमारी बास्केट की जेब में खाली कर दो। विचित्र आदेश था लेकिन अनुपालना तो करनी ही थी। श्री योगी ने वह पर्ची डब्बे में ही रहने दी और बाकी रकम उनकी जेब में रख दी। हज़रत बोले, तुम्हें कहा ना कि उस डब्बे में जो कुछ है वह सब हमारी जेब में रखो। तब वैसा ही किया गया। अब कृपा की धारा बही। हुजूर बोले - हमने तेरा सारा कर्ज साफ कर दिया है। अब तू निश्चिंत रह। सब के सब स्तब्ध। ऐसी कृपा! इतनी दया! ऐसा लाड़ दुलार! फिर जेब से सौ रुपऐ का नोट निकाल कर देते हुए कहा कि इसे उक्त डब्बे में रख दो; इसे कभी भी खाली

मत करना। योगी जी का कहना है कि उस दिन के बाद वे कभी भी कर्जदार नहीं रहे। पैसा आता-जाता रहा; किंतु ऋण नहीं चढ़ा। वह डब्बा हज़रत की नजर से 'अक्षय पात्र' हो गया।

(21). श्रीमती नम्रता -

गुरु आपके उपकार का, कैसे चुकाऊं मोल!
लाख कीमती धन भला, गुरु मेरा अनमोल।

श्री राम भैया को शत् शत् नमन। वे मेरे गुरु ही नहीं बल्कि भाई भी हैं। भैया ने हमेशा मेरा साथ दिया है। मेरा उन पर अटूट विश्वास है। बात उस वक्त की है जिन दिनों हमारी आर्थिक स्थिति डगमगा रही थी। मुझे बच्चों के भविष्य की चिंता सताती रहती थी। अब हुआ यह कि एक दिन हम आश्रम में उनके पास बैठे थे। उस समय भी मैं बच्चों के लिए व्याकुल थी। वे मेरे मन को पढ़ कर बोले - तू बच्चों की चिंता मत कर। बच्चे बहुत अच्छे रास्ते पर निकलेंगे। इस तरह मेरे कहे बिना ही मुझे मेरी चिंताओं से मुक्त कर दिया। आज भी मेरे मन में हर सवाल का जवाब देते हैं मेरे गुरु जी। मेरे जीवन को पूर्णता देने वाले भैया को मैं जितना धन्यवाद दूं, उतना कम है।

(22). श्रीमती मोनिका गुप्ता - श्री राम भैया यानी सुकून, आश्वासन और आशीर्वाद। उन्होंने मेरी बीमारी ठीक की। मेरे भाई का काम किया। वह जब उनके साथ झांसी गया हुआ था तब उस पर दादा हुजूर की कृपा हुई; उन्होंने उसके सिर पर हाथ रखा था। आज वह बहुत अच्छी अवस्था में है। मेरे बेटे की बीमारी जो डॉक्टरों से ठीक नहीं हुई, हुजूर की कृपा से वह स्वस्थ हो गया। उनकी रूहानी नजर आज भी हम सब पर है।

(23). श्री होशियार सिंह जी - आप हज़रत हरप्रसाद मिश्रा साहब, कुण्डलिनी विशेषज्ञ श्री महेंद्र मिश्रा साहब के कृपा पात्र रहे हैं। रेवाड़ी में रहते हैं। आश्रम आते-जाते रहते हैं। आपने बताया कि एक बार गुरुदेव व अन्य साधकगण झांसी से लौट रहे थे। आगरा-दिल्ली मार्ग पर जोरदार जाम लगा हुआ था। गुरुदेव ने राम जी को कोई रूहानी संकेत किया (कि देखो क्या मामला है और आगे निकलने का इंतजाम करो)। वे गाड़ी से उतरे, जो करना था किया। पांच मिनट बाद ही पुलिस जैसी वर्दीधारी आदमी आया? जाम हटवाया, इनकी तीन गाड़ियां निकल गईं। बस, जाम वापस लग गया।

ऐसे ही श्री मुन्नालाल जी मित्तल के घर फंक्शन था। महफिल के बाद सुबह चार बजे राम जी ने वहां से आश्रम के लिए प्रस्थान किया। स्कूटर पर पीछे श्री होशियार सिंह जी बैठे थे। ब्यावर रोड़ से शम्भूनाथ बाबा की टेकरी दिख रही थी। होशियार सिंह जी ने पूछ लिया - आपने तो बाबा के दर्शन किए होंगे। राम जी ने सहज भाव से कहा, हाँ; पिताजी ने कराए थे। यह टेकरी ध्यान मग्न महादेव के साकार रूप जैसी दिखती है। यह सिद्ध स्थान है।

(24). श्री ओम प्रकाश जैन (ओम जी) - आप अच्छे साधक, उत्तम सेवक और गुरु धाम के प्रति निष्ठावान हैं। कई साल से बाबा हुजूर के आस्ताने में साप्ताहिक सेवा का निर्वाह कर रहे हैं। गुरुदेव एवं हज़रत, दोनों के प्रिय रहे हैं। आपने एक कृपा प्रसंग बताया - इनके मकान का सौदा होना था। पैसे के अलावा भी कुछ दिक्कतें थीं। बात बन नहीं रही थी। आपने फिर सारा मामला गुरु जी व सरकार को सौंप दिया। तब जैसे अनुकूल सुहानी हवा चलने लगी। सरकार के जन्मदिन, 25 अक्टूबर, के मुबारक

अवसर पर इनके मकान की रजिस्ट्री हो गई। आपकी ही कृपा से गुरु भाईयों का भरपूर सहयोग मिला। आपने लिखा है - ‘‘मालिक के दर्शन स्थान पर व आश्रम में होते रहते हैं; कभी समाधि रूप में तो कभी साक्षात स्वरूप के। कभी स्वप्न में सरकार अपनी मुस्कराती हुई झलक दिखा देते हैं तो कभी पिता जी कोई निर्देश देते हैं अथवा अपनी रूहानी छवि के दर्शन करा देते हैं। कभी-कभी स्थान पर बाबा रजनीकांत जी में पिता जी नजर आ जाते हैं। महफिल के दौरान अनेक बार ऐसा हुआ कि ज्यों ही आँखें बंद कीं, सरकार किसी सूफी कलाम पर रूहानी नूर बरसाते हुए दिख जाते हैं। यह मेरे गुरुदेव का ही करम है जो मेरे जैसे साधारण मनुष्य को बाबा साहब के आस्ताने की सेवा दर्शन का अवसर इतने साल से मिला हुआ है। मालिक से बस इतनी ही प्रार्थना है कि अपने दर का गुलाम बनाए रखें और कृपा करते रहें।

(25). श्री पुनीत जैन - इनका कहना है कि - पीर तो हर जगह है। सदैव साथ है। आस-पास है। सांस में है। संकट का निवारण करता है। चेताता है। आगाह करता है। बचाता है। हम उसके बिना कहीं भी अकेले नहीं हैं। वह दयालु परमात्मा है।

इनके ही अनुसार एक बार वे अपनी भाभी को छोड़ने फिरोजाबाद गए। उन्हें घर पहुंचा कर वे उसी दिन आगरा अपनी बुआ के पास जाना चाहते थे। उधर भाभी एवं उनके घर वालों की जिद थी कि कल जाना; आज तो यहीं ठहर जाओ। उन्होंने बताया कि संध्या के बाद उस मार्ग पर अक्सर लम्बा जाम लग जाता है। फिर भी पुनीत जी नहीं माने और आगरा वाली बस में बैठ गए। थोड़ा आगे पहुंचने के बाद देखा कि सड़क पर लम्बा जाम लगा हुआ है। अब तो गुरु सरकार की याद आई। मन में गुरु मंत्र का जाप करने लगे। इसका चमत्कार भी सामने आया - पीछे से किसी

आदमी ने आ कर ड्राईवर से कहा कि गाड़ी थोड़ी सी उधर ले लो। मुझे आगे निकलना है। तुम भी मेरे पीछे आते रहना। ड्राईवर ने ऐसा ही किया। एक अनजानी राह बनती गई और ये जाम से आगे निकल गए। बस में बैठे हुए यात्रीगण बोले कि भगवान ने ही आज हमारी मदद की है। कई लोगों ने मुड़ कर देखा भी किंतु वह आदमी कहीं नजर नहीं आया। श्री पुनीत की आँखों में कृतज्ञता के आंसू छलकने लगे। उन्होंने मन ही मन सरकार को प्रणाम किया।

(26). श्री अजीत अग्रवाल - ये बहुउद्देशीय व्यक्ति हैं। सी ए हैं। अनेक सामाजिक व आध्यात्मिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। हज़रत के कृपा प्रसंग के सन्दर्भ में इनके पास गया तो प्राथमिक तौर पर बोले - वे हमारे प्रभु हैं; वे ही द्दष्टा हैं; और वे ही कर्ता हैं। आप शिष्य तो हज़रत हरप्रसाद मिश्रा साहब के हैं किंतु श्री रामदत्त जी को उनसे पृथक नहीं देखते हैं। आपने दो प्रसंग सुनाए – पहला - इनके मकान का नांगल एवं प्रीतिभोज का आयोजन था। मई, 2007 की बात है। गुरुदेव और श्री रामदत्त जी सुबह से ही इनके घर थे। गुरुदेव तो ध्यान में ही डूबे रहे। अपराह्न चार बजे अचानक ही मौसम बिगड़ने लगा। आंधी तूफान का माहौल हो गया। चिंता की बात यह थी कि भोजन का आयोजन खुले बगीचे में था। अब क्या करें। गुरुदेव ने तब ही श्री राम जी को कहा कि 'मौसम बिगड़ रहा है; जरा देखो'। श्री राम जी ने अपना काम किया। शाम के छह बजते बजते मौसम एकदम सुहावना हो गया। सारा कार्यक्रम राजी खुशी सम्पन्न हो गया।

दूसरा, आपने मकराना में मार्बल का चूरा करने वाली फैक्ट्री स्थापित की। हज़रत को वहां ले गए। वहां पानी की बड़ी किल्लत थी। आसपास की किसी भी फैक्ट्री में पानी

नहीं था। हज़रत ने इन्हें फैक्ट्री के परिसर में एक स्थान बताते हुए कहा कि वहां बोरिंग कराओ। वहां साढे छह सौ फीट तक पानी नहीं निकला। अजीत जी परेशान हो गए। इन्हें फोन किया। आप बोले कि कल फिर खोदो। दूसरे दिन खुदाई करते ही पानी आ गया। इसके पश्चात भी वहां अन्य कहीं पर किसी को पानी नहीं मिला। गुरु के खेल निराले होते हैं।

(27). श्री गौरव अग्रवाल - श्री सूरज अग्रवाल एवं श्रीमती गीता अग्रवाल के पुत्र हैं। हज़रत का इन पर बहुत स्नेह था। इन्होंने रेडीमेड गारमेंट का शोरूम खोला था। ग्वालियर सूटिंग्स की फ्रेंचाईज़ी भी मिल गई थी। किंतु जिस मकान में उक्त दुकान थी वह मकान रेल्वे के साथ विवाद में फंस गया। इनके पास दो विकल्प थे - शोरूम का विस्थापन करें या बंद कर दें। विस्थापन के लिए कम्पनी तैयार नहीं थी। अतः हज़रत की सलाह के अनुसार शोरूम को बंद कर दिया। अब वहां से अमानत राशि लेनी थी जो कि कम्पनी की शर्तों के अनुसार बहुत कठिन काम था। फिर बड़ी अड़चन यह आई कि कम्पनी का जो माल आपने ट्रांसपोर्ट के जरिये लौटा दिया था वह कम्पनी को नहीं मिला। हज़रत ने पुनः नजर डाली और कहा कि ट्रांसपोर्ट कम्पनी में माल का पैकेट तलाश करो। संक्षेप में कृपा ऐसी हुई कि वहां एक हजार पैकेट्स के बीच आप वाला पैकेट सामने ही रखा हुआ मिल गया। माल कम्पनी को लौटा देने के बाद अमानत राशि के 35-40 लाख रुपए मिल गए।

(28). श्री इंद्र दत्त मिश्रा - आप श्री प्रभुदत्त मिश्रा के पुत्र हैं। गुरुदेव के अनुसार कोई उत्तम जीव है जो पिछले जन्म का अधूरा काम पूरा करने के निमित्त आया है। बच्चे ने छोटी उम्र में ही जाप शुरू कर दिया। एक दिन हज़रत ने उसे अपनी माला देते हुए

कहा कि इससे जाप किया करो। जरूर इसमें कोई रूहानी संकेत रहा होगा अन्यथा फकीर अपनी माला किसी को बेमतलब नहीं देता है।

(29). श्री गोपाल धाकड़ - गुरुदेव के परम शिष्य हैं। पारौली में रहते हैं। वहां गुरु जी का मंदिर बनाया है। मालिक वहां साक्षात दर्शन देते हैं। सुना है कि बाबा हुजूर की भी वहां रहमत है। ये पढ़ते थे तब इन्हें कोई आस्ताना व एक बुजुर्ग दिखते रहते थे। उस स्थान की तलाश में भटकते रहते थे। बाद में कॉलेज की पढ़ाई के लिए अजमेर आए। भावी नियति के अनुसार गुरुदेव के घर में ही किराए का कमरा मिला। वहां हुजूर की छवि देखी। स्थान पर गए; और सुनिश्चित हुआ कि बरसों की तलाश यही जगह है। इनकी मेहनत, सेवा भाव और शालीनता ने गुरुदेव का दिल जीत लिया। आपने इन पर शक्तिपात किया और रूहानियत का चस्का लगा दिया।

ये गोपाल जी अपने गांव में पोस्टमैन थे। इनकी जमीन एवं कर्ज का विवाद गुरुदेव की नजर से सुलट गया। रूहानियत में आगे बढ़े। ध्यान में गुरु जी के दर्शन होते रहते थे। श्रद्धा बलवती हुई। घर में ही मंदिर बनवाया। अब उसका विस्तारीकरण कर रहे हैं। प्रति गुरुवार की रात वहां भजन होते हैं। यह मंदिर ग्रामीणों के लिए रूहानी केंद्र का काम कर रहा है।

12. हज़रत के बाद!

आपके पर्दा कर लेने के बाद श्री मुनेंद्र दत्त मिश्रा आश्रम के गद्दीनशीन हुए। आप श्री गुरुदत्त जी के पुत्र हैं। विवाहित हैं; पत्नी श्रीमती बीना मिश्रा। आपके एक पुत्री है। मुनेंद्र दत्त जी पर उनके दादा हज़रत हरप्रसाद मिश्रा साहब का बहुत प्रेम रहा है। इनके दिये हुए कई मंत्र इनके पास हैं। इन मंत्रों से ये जन कल्याण में लगे हुए हैं। चाचा-गुरु रामदत्त जी ने भी इन्हें रूहानियत के पथ पर आगे बढ़ने के लिए सदैव प्रेरित किया। आप ही अब भण्डारों के अवसर पर आयोजित महफिल की सदारत करते हैं। प्रति गुरुवार हमारे गुरुदेव की समाधि को गुसल देने, फूल माला व प्रसाद पेश करने का कार्य आप बहुत मनोयोग एवं रूहानी भाव में स्थिर रहते हुए करते हैं। भण्डारों के समय सेवादारों के साथ आप सारे कार्य में सहभागी रहते हैं - सेवादारों को इससे बहुत प्रेरणा मिलती है और वे इनकी तारीफ करते रहते हैं। आश्रम के प्रबंधन में ये अपने पिता श्री गुरुदत्त मिश्रा का पूरा सहयोग करते हैं।

श्री गुरुदत्त मिश्रा

आप उवैसिया रूहानी सत्संग आश्रम व ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं। आरम्भ से ही अपने पिता-गुरु के सानिध्य में रहते हुए उनकी रूहानी कृपा भी बटोरते रहे हैं। कई रूहानी मुद्दों की बारीकियां मुझे इन्होंने भी समझाई हैं - यह उस वक्त की बात है जब मैं गुरुदेव से बात करते हुए हिचकता था। मुझे अनेक बार ऐसा लगा कि इनके माध्यम से गुरुदेव ही बोल रहे हैं। पचासों बार इनके साथ मेरी वैचारिक गोष्ठी सम्पन्न हुई है। मुझे पहली बार रामपुर भी गुरु भैया ही ले गए थे। यदि वे ऐसा नहीं करते तो मैं उन

अनुभूतियों से वंचित रह जाता जो आज मेरी रूहानी दौलत हैं। इसी तरह एक बार झांसी ले गए। वहां दादा हुजूर की कृपा ने सराबोर किया था। लौटते वक्त बहुत दूर तक फरिश्तों के साथ का दिव्य अनुभव हुआ। इस करम के मूल में भी श्री गुरुदत्त जी ही हैं। इसके लिए आपका आभार।

आपके व्यक्तित्व की विशेषता इसी बात से ज्ञात हो जाती है कि गुरुदेव ने राम जी को अपना आध्यात्मिक उत्तराधिकारी बनाने की बात सबसे पहले गुरुदत्त जी को ही बताई। इसकी वसीयत भी इन्हीं के पास रखवाई।

गुरुदेव की रूहानी (रामपुर, झांसी की जियारत) एवं सामाजिक यात्राओं में आप भी उनके साथ रहते थे। मात्र दस वर्ष की उम्र में आपने बाबा हुजूर के साथ झांसी की यात्रा की थी। इस तरह विगत पचास वर्ष से आप भी रूहानी पथ पर चल रहे हैं।

आश्रम और सोमलपुर वाली दरगाह का प्रबंधन आपके ही जिम्मे रहा है। दोनों दरगाह के निर्माण कार्य में आपका मानसिक परिश्रम शामिल है। आप विजय भैया के साथ दिन दिन भर खड़े रहते थे। प्रबंधन में कई बार कठोर भी होना पड़ता है। ऐसी योग्यता आप में है। मन साफ लेकिन बात बेबाक। आश्रम में आज अनेक काम हैं जो इनके ही सुचारू नेतृत्व के कारण व्यवस्थित ढंग से चल रहे हैं - नियमित साफ सफाई, रसोईघर , शोध संस्थान, श्रमिकों के वेतन का भुगतान, बगीचों एवं खेतों में हो रहे काम पर नजर, आगंतुकों के ठहरने व खाने का प्रबंध, मीडिया से मिलना आदि। इस तरह श्री मुनेंद्र दत्त मिश्रा और श्री गुरुदत्त मिश्रा आश्रम एवं बाबा हुजूर की दरगाह का प्रबंध सम्हाले हुए हैं। आप अब आश्रम में ही रहते हैं और आश्रम का

पर्याय बन चुके हैं।

श्री प्रभुदत्त मिश्रा

आप हज़रत के छोटे भाई हैं। उनके सहचर रहे हैं। ए. डी. आर. एम. (अजमेर) के पी.एस. पद से स्वैच्छिक सेवा निवृत्त हुए हैं। आपको अपने पिता हज़रत हरप्रसाद मिश्रा उवैसी एवं हज़रत रामदत्त जी मिश्रा उवैसी; दोनों की रूहानी कृपा मिली है। आप अपने भैया हुजूर के तो सहचर रहे हैं। उनके पर्दा फरमाने के बाद उनके कार्यों की निरंतरता बनाए हुए हैं - प्रति माह द्वितीय एवं चतुर्थ शनिवार को ध्यान शिविर का आयोजन, भजन गायन, यदा-कदा रूहानी कलाम पेश करना, नये साधकों को दिशा निर्देश आदि। आप आश्रम के साधक साधिकाओं को रामपुर एवं झांसी की जियारत भी कराते रहते हैं। आश्रम एवं बाबा हुजूर की दरगाह में होने वाले सभी उत्सवों में आप की सहभागिता अवश्य रहती है।

श्री रज्जो चाचा

पूरा नाम श्री रजनीकांत मिश्रा। विगत पांच दशक से बाबा हुजूर के सेवादार हैं। उन्हीं से दीक्षित हैं। आप हुजूर, गुरुदेव एवं हज़रत; तीन-तीन महात्माओं की सोहबत में रहे हैं। आप बेहद अदब वाले और मौन साधक एवं सेवादार हैं। आस्ताने में अब गुसल की रस्म आप ही की नजर से होती है। नये साधकों को सेवा का सलीका आप से सीखना चाहिए। आप वहां आने वाले श्रद्धालुओं को उवैसिया बुजुर्गों के जीवन वृत्तांत से अवगत कराते रहते हैं। जो गुरु भाई वहां अपनी 'ड्यूटी' के अनुसार जाते हैं उन्हें

भी रूहानी प्रसंग सुना-सुना कर साधना के लिए प्रेरित करते रहते हैं। सोमलपुर गांव के लोगों में भी आप लोकप्रिय हैं।

13. पुनः हज़रत रामदत्त मिश्रा उवैसी

नाम की चादर ओढ़ो, गुरु तुम्हारा सारथी बन जाएगा

अजमेर के सूफी संत हज़रत रामदत्त मिश्रा का पूरा जीवन रूहानी उत्सव था। वे ऐसे थे - जैसे कोई नूरानी बादल, जैसे फूलों की घाटी में कल-कल करते झरनों का संगीत, जैसे किसी तपोवन में 'गुरु ओम तत् सत्' की अनुगूंज। मुरीदों के लिए इनकी यादें हवा में खुशबू और धूप के उजाले जैसी हैं जो सब जगह उनके साथ हैं। ब्यावर रोड स्थित उवैसिया रूहानी सत्संग आश्रम में आपकी दरगाह है।

पीर तो मुरीद को पार लगाता है

वे कहते थे कि पीर वह, जो अपने मुरीद को पार लगा दे। साथ ही मुरीद में भी पार उतर जाने की कसक होनी चाहिए। मतलब यह कि मुरीद 'नाच्यो बहुत गोपाल' की तड़प ले कर जाए तो गुरु उसके भीतर रुहानी चेतना का एक कण प्रविष्ट कर देता है। यह कार्य नाम दीक्षा के जरिए किया जाता है। किंतु अधिकतर लोग धन-माया मांगने जाते हैं, फलस्वरूप पार लगा देने वाली कृपा से वंचित रह जाते हैं।

रूहानी जगत में आसन

गुरु सबसे बड़ा काम यह करता है कि शिष्य को रूहानी लोक में आसन दिलाता है। रूहानी उत्कर्ष के लिए यह जरूरी है। इसका अर्थ है - शक्तिपात के माध्यम से मुरीद के ध्यान को आज्ञा चक्र पर स्थिर कर देता है। इस तरह शिष्य नीचे के पांच चक्र खोलने के परिश्रम से बच जाता है। यहीं से असल इबादत या भक्ति आरंभ होती है। गुरु का वास्तविक ऋण यही होता है कि वह रूहानियत में आसन दिलाता है। इसी ऋण को उतारने को गुरुदक्षिणा कहा जाता है। मुरीद को इसके लिए पीर के रूहानी मुकाम तक पहुंचना पड़ता है। वहां गुरु कहता है.....शाबाश! जाओ, वह सामने ही है ब्रह्म का ठिकाना; जाओ। तब कबीर का वह दोहा सार्थक होता है जिसमें कहा गया है कि 'बलिहारी गुरु आपकी, गोविंद दियो बताय'।

जब गुरु सारथी बन जाता है

रामदत्त जी गीता में कृष्ण के कथन को दोहराते हुए कहते थे कि इबादत का मज़ा तब है जब पीर तुम्हारा सारथी बन जाए। इसके लिए नाम में डूब जाओ। नाम को अपनी धड़कन बना लो। आज्ञा चक्र पर नाम की लगातार टक्कर मारते रहो। नाम को देखो, नाम को सुनो। नाम को ही आसन बना लो। नाम की ही चादर ओढ़ो। जब ऐसा करोगे तो गुरु तुम्हारा सारथी बन जाएगा। तुम्हारे लोक-परलोक का रखवाला बन जाएगा। पार लगाने वाले पुल पर तुम्हें चला देगा।

वह बेअदबी है

वे खुलेआम कहते थे कि फूल, माला, प्रसाद से परमात्मा नहीं मिलेगा। किस्मत से परमहंस पीर मिला है तो खुद को पार लगाओ। ऐसा नहीं करना बेअदबी है। ऐसे महात्मा की शरण मिलने के बाद भी अधोयोनियों में पुनर्जन्म दिलाने वाले कर्म करते रहना बेअदबी है। गुरुकृपा का मान नहीं रखना बेअदबी है। उसकी विरासत की रक्षा नहीं करना बेअदबी है। आपका नसीब अच्छा है कि गुरु के रुप में देहधारी परमात्मा मिल गया है। फिर भी तुमने धन-दौलत मांगी तथा उसकी राह को नहीं अपनाया, यह बदनसीबी है। कच्ची रोटी खाओगे तो पचेगी नहीं। ऐसे ही नाम को पकाओगे नहीं तो पार नहीं लगाएगा।

जीवन ही उत्सव हो जाए

मज़ा तो तब है जब गुरुकृपा से तुम जीवन को उत्सव बना लो। सारा जीवन रामोत्सव, कृष्णोत्सव हो जाए। एक-एक पल नामोत्सव हो जाए। पीर साथ है तो घर में रोज ईद है। नाम खुलेगा तो उसकी ऊर्जा ऐसा कर देगी। आपका सभी शिष्यों को यह उपदेश रहा है।

जय श्रीराम !

14. परिचय - श्री शिव शर्मा

आध्यात्मिक विषय पर श्री शिव शर्मा की बाईस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अध्यापन के क्षेत्र में अपनी अमूल्य सेवाएँ देने के बाद आप राजकीय महाविद्यालय, देवली (टोंक) के हिन्दी विभाग से सेवानिवृत्त हुए। आपने अध्ययन, लेखन एवं प्रकाशन की चालीस वर्षीय लंबी यात्रा तय की है। पत्रकारिता में शताधिक लेख तथा फीचर्स प्रकाशित हो चुके हैं साथ ही स्तम्भ लेखन एवं सम्पादन के क्षेत्र में आप अपने उल्लेखनीय कार्य के लिए विख्यात हैं। जिला पत्रकार संघ (अजमेर) एवं एन. एम. एफ आई. (ऋषिकेश) द्वारा सम्मानित किए जा चुके हैं।

प्रकाशित पुस्तकें: -

1. अजमेर; इतिहास एवं पर्यटन 2. पुष्कर; अध्यात्म एवं इतिहास 3. हमारे पूज्य गुरुदेव 4. दशानन चरित 5. गुरु भक्ति की कहानियाँ 6. मोक्ष का सत्य 7. सूफी संत और उनकी कथाएँ 8. कर्मण्येवाधिकारस्ते 9. गीता पाप मोचनी 10. गीता में जीवन की पूर्णता 11. सद्गुरु शरणम् 12. नारी मुक्ति 13.अवतार का रहस्य 14. श्रीकृष्ण से मुलाकात 15. गीता - 150 प्रश्नोत्तर 16. एक श्लोक की गीता 17. संत श्री सेवाराम 18. रूहानी पुरुष 19. श्री राम चरित 20. श्रीकृष्ण जयते 21. श्री हनुमान चालीसा - विस्तृत व्याख्या 22. अजमेर के उवैसी सूफी संत

आगामी पुस्तकें - चेतन तत्व, कथोपनिषद और कसक (कविता संग्रह)

इस पुस्तक से...

अजमेर शहर के सूफी संत हज़रत रामदत्त मिश्रा का पूरा जीवन रूहानी उत्सव था। वे ऐसे थे, जैसे - कोई रूहानी बादल, जैसे कोई सूफी कलाम सजीव हो गया हो, जैसे किसी तपोवन में 'गुरु ओम तत्सत्' गूंज रहा हो। मुरीदों के लिए इनकी यादें हवा में खुशबू और धूप के उजाले जैसी हैं जो सब जगह उनके साथ हैं। ब्यावर रोड स्थित उवैसिया रूहानी सत्संग आश्रम में आपकी दरगाह है।